ज्ञानामृत

अक्टबर, 1986

वर्ष 22 ❋ अंक 4

मूल्य 1.50

माऊंट आबू: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान का उद्घाटन दृश्य। ब्रह्माकुमारी राजी प्रकाशमणि जी तथा छोगाराम बकोलिया, मंत्री सिविल सप्लाई राजस्थान, उद्घाटन करते हुए।

हैदराबाद: भ्राता पी. नगेश्वर राओ, गृहमंत्री आ.प्र. 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान का उद्घाटन करते हुए।

इंदौर: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' का शुभारम्भ न्यायमूर्ति आर.के. वर्मा जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

माऊंटआबू में भ्राता नलनि पटेल (मंत्री एनर्जी, गुजरात) समर्पण ब्र.कु. भाइयों के भट्ठी के समाप्ति समारोह में अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

गुहाटी: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान का उद्घाटन करते हुए गुहाटी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जी तथा आर.के.एम. सिंह न्यायाधीश गुहाटी उच्च न्यायालय।

लखनऊ खुर्शिदबाग : सेवाकेन्द्र की ओर से सती बहन राजभवन में राज्यपाल भ्राता मोहम्मद उस्मान आरिफ को आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

मद्रास में बी.के. शिवकन्या तमिलनाडु के राज्यपाल श्री एस.एल. खुराना को राखी बांधते हुए।

नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता मारीचमानसिंह श्रेष्ठ जी को बी.के. राज राखी बांध रही हैं साथ में गीता बहन।

गांधीनगर: ब्रह्माकुमारी कैलाश गुजरात के राज्यपाल भ्राता आर.के. त्रिवेदी को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए।

अमृत सूची

१.	अहंकार को कैसे भगाएं ?	... १
२.	राष्ट्रीय एकता और सरकारी निर्णय	... २
३.	सचित्र समाचार	... ४
४.	राम कहानी	... ५
५.	विश्व पिता बापू की पुकार	... ८
६.	प्यारा मधुबन	... ८
७.	सचित्र समाचार	... ९
८.	नई उमंगें	...१०
९.	जगत का करने फिर निर्माण	...१४
१०.	सचित्र समाचार	...१५
११.	मैं दुःख क्यों लूं !	...१९
१२.	आध्यात्मिक प्रगति का आधार—निर्भयता	...२०
१३.	बाबा के बच्चे	...२२
१४.	ब्राह्मण जीवन का आधार—पवित्रता	...२२
१५.	सचित्र समाचार	...२३
१६.	शांति की चाह	...२५
१७.	हमारा कर्तव्य	...२६
१८.	क्या रावण मर चुका है !	...२७
१९.	तुम चुपचाप दिए जलाए चलो... !	...२८
२०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०

नई दिल्ली: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान का उदघाटन समारोह साउथ म्युजियम मे आयोजित किया गया। आदरणीय एर्गासटिनो एम्बेसडर होली सी, सम्बोधन करते हुए।

अहंकार को कैसे भगाएं ?

जब मनुष्य के मन में अहंकार का अशुद्ध संकल्प उठता है तो वह दूसरों को उचित सन्मान और स्थान नहीं देता। परंतु जिस मनुष्य के मन में ईश्वरीय ज्ञान के अंकुर पड़ चुके हैं वह शीघ्र ही अहंकार के वशीभूत होने से स्वयं को बचा लेता है। वह सोचता है कि यह अहंकाररूपी शत्रु तो मनुष्य को स्वर्ग के सिंहासन से गिराने वाला अथवा वैकुण्ठ के द्वार से निकलवाकर उन्नति की सीढ़ी से उतारने वाला है। अतः वह देह-अभिमान को छोड़कर फिर से आत्मा-निश्चय में स्थित हो जाता है और त्रिमूर्ति परमपिता की स्मृति में टिक जाता है। वह दूसरों से मिठास, शिष्टता तथा नम्रतापूर्वक व्यवहार करता है और उन्हें भी परमपिता परमात्मा का परिचय देकर पारस्परिक भाई-भाई का आत्मिक नाता जतलाता है। इस प्रकार,उसकी दृष्टि ऊंची उठ जाती है और वह लोकप्रिय, मनपसंद तथा प्रभु-प्रिय बन जाता है और दूसरों को अपने कोमल एवं सहानुभूतिपूर्ण शब्दों से सुख देकर स्वयं भी सुख पाता है।

माऊंट आबू: राजस्थान के मुख्यमंत्री भाता हरदेव जोशी ओमशांति भवन में विज़िटर बुक पर हस्ताक्षर करते हुए। साथ में ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी तथा दादी चंद्रमणि जी उपस्थित हैं।

राष्ट्रीय एकता और सरकारी निर्णय

गत मास राष्ट्रीय एकता परिषद (National Integration Council) की जो बैठक हुई, उनके सदस्यों ने, जिनमें प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा प्रदेशों के मुख्यमंत्री आदि भी सम्मिलित थे, जो निर्णय लिये, उनमें एक फैसला यह था कि सरकारी कार्यों या कार्यक्रमों का उद्घाटन आदि किन्हीं धार्मिक क्रिया-कलापों या रस्मों से शुरू नहीं होना चाहिए। हमारे विचार में यह एक ऐतिहासिक महत्व का निर्णय है यद्यपि ऊपरी तौर पर यह एक साधारण सरकारी फैसला मालूम होता है। यों हम स्वयं ज्यादा धार्मिक रस्मों के पक्ष में नहीं हैं परंतु हम केवल उन रस्मों को बढ़ावा नहीं देना चाहते जो निरर्थक या खर्चीली हों या अपशकुनवाद (Superstition) पर आधारित हों। उत्सवों का या कार्यक्रमों का उद्घाटन किसी-न-किसी विधि से तो होता ही है; यदि वह धार्मिक अथवा आध्यात्मिक पुट को लिये नहीं होगा तब या तो वह भौतिकवाद के रंग में रंगा होगा या किन्हीं और प्रकार की रस्मों को बढ़ावा देनेवाला होगा। मान लीजिए कि किसी कार्य या कार्यक्रम का उद्घाटन कहीं मोमबत्तियों को जगाकर या प्रकाश का बटन दबाकर (By switching on the light) किया जाता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति कहेगा कि यह अज्ञानान्धकार के अंत और ज्ञान उजाले अथवा विवेक प्रकाश का द्योतक है। अब इसको यदि कोई करने के लिए सरकारी तौर से रोके तो यह कैसा अजीब निर्णय लगता है। यदि कोई मोमबत्ती न जगाकर भारतभूमि की मिट्टी से बने और अपने ही देश के कुम्हार की कलाकृति से बने दीपकों को जगादे तो हो सकता है कि उसे इससे हिंदूमत के प्रचार की गंध आये तो यह कितना गलत ख्याल होगा। मान लीजिए, स्वस्तिक बनाकर और नारियल तोड़कर कोई उद्घाटन किया जाए तो इस पर किसी को क्यों आपत्ति होनी चाहिए। नारियल हमारे देश का ही मेवा है जो लगभग हर ऋतु में प्रायः सभी जगह मिल ही जाता है और इसकी गिरी और इसके पानी के अनेक लाभ हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से भी अगर देखा जाय तब भी अगर कोई यह स्पष्ट कर दे कि स्वस्तिक एक ऐसी आकृति अथवा चिन्ह है जिसके रहस्य को समझने से सचमुच मनुष्य का मंगल-कुशल होता है और नारियल की आकृति एक ऐसी आकृति है जो प्रायः सभी धर्मों में सर्वोच्च सत्ता की प्रतीक है तो इसे वर्जित करना कहां तक उचित है?

खैर, जैसे कि हमने पहले बताया हम रस्मवाद का प्रतिनिधित्व नहीं करते। हमारे उत्सव तो आध्यात्मिक होते हैं और उनका उद्घाटन हम जैसे भी करना चाहें, चाहे उसमें सरकारी अधिकारी भी शामिल हों और चाहे स्वयं उन द्वारा भी उद्घाटन हो, उसमें तो हमारे ख्याल में कोई सरकारी पाबंदी नहीं है क्योंकि वे प्रोग्राम सरकार द्वारा आयोजित नहीं हैं। हमने इसे जो ऐतिहासिक महत्व का निर्णय कहा है और यहां इसकी चर्चा कर रहे हैं, उसका स्पष्टीकरण निम्नलिखित है—

जब हम संसार के पिछले ५००० वर्ष के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो हम पाते हैं कि पहले लगभग २५०० वर्षों तक राजा-रानी और उनके अधीन शासनाधिकारी नैतिक गुणों से युक्त, पवित्रता सम्पन्न और दिव्य मर्यादापूर्ण होते थे। दूसरे शब्दों में राजा, शासकाधिकारी तथा जनता—सभी धर्म-परायण अथवा धर्मनिष्ठ होते थे। धार्मिक क्रिया-कलापों के लिए कोई अलग स्थान या पुरोहित, पंडित, पुजारी इत्यादि नहीं होते थे। धर्म हर व्यक्ति के आचरण में होता था अथवा उनके स्वभाव और संस्कार सहज रूप से ही पवित्रता को लिए हुए थे। उसके बाद जब नर-नारी पतित होने लगे तब पूजा स्थान बनने लगे। धार्मिक चर्चा के लिए पुस्तकें अथवा ग्रंथ रचे गए। उनका पाठ या परायण करने-करानेवाले अथवा पूजा के विधि-विधान को चलानेवाला पुजारी वर्ग अलग हो गया। शासनकर्त्ता वर्ग उससे भिन्न बन गया तथा व्यापार करनेवाले और इन तीनों से अलग काम करनेवालों का अलग वर्ग हो गया। इस प्रकार समाज के चार मुख्य वर्ग हो गए जिन्हें लोग ४ वर्णों के नाम से जानने लगे। ऐसी समाज-व्यवस्था में भी शासक धर्म के अंकुश को तो मानता ही था और धर्माचार्यों का आदर करता था तथा धर्म की रक्षा करना, धार्मिक कार्यों में विशेष भाग लेना आदि उसका कर्त्तव्य माना जाता था। उस ऐतिहासिक काल में स्वयं राजाओं ने बड़े-बड़े मंदिर बनवाये और यज्ञ किये या धार्मिक सभाओं का आयोजन किया। फिर बाद में जब संसार में अनेक 'धर्म' अथवा अनेक मत अथवा अनेक सम्प्रदाय हो गये तब भी कम-से-कम भारत के राजा और प्रजा ने धार्मिक सहिष्णुता को बनाये रखा। उन्होंने धर्म को

अहमदाबाद: ब्रह्माकुमारी सरला गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता अमरसिंह चौधरी को राखी बांध रही है।

महू : एम.सी.टी.ई. महू के कमान्डेन्ट लेफ्टिनन्ट जनरल भ्राता एस.एल. मेहरोत्रा जी को ब्र.कु. हेमलता राखी बांध रही है।

जयपुर: [illegible] भ्राता [illegible] जी को राखी बांधने के पश्चात गोल्डन जुबली । कैलेन्डर सौगात में दिया गया।

ऊटी: ब्र.कु. रतनमणि 'विश्वशांति अभियान' के उद्घाटन समारोह में शांति की अपील करते हुए।

बम्बई (गोरेगांव) : में पाठशालाओं के मुख्याध्यापकों के 'राजयोग शिविर' के प्रोग्राम में प्रसिद्ध डॉ. भगत अपना अनुभव व्यक्त कर रहे हैं।

राम कहानी

भारत में 'राम' और 'राम राज्य' का बहुत गायन है। यहाँ शायद ही कोई नगर होगा जहाँ राम का कोई मन्दिर न हो और शायद ही कोई मनुष्य होगा जिसने 'राम कथा' को न सुना हो। परन्तु आज जो राम कथा मिलती है उसे सुनकर कोई तो कहता है कि कथा में एक बिल्कुल सत्य ऐतिहासिक वृत्तान्त का वर्णन है और अन्य कई विचारक कहते हैं कि 'राम कहानी' एक वास्तविक घटना नहीं हो सकती क्योंकि इसमें जैसे सीता का जन्म खेत में हल चलाते समय एक लकीर (furrow, कूढ़) से हुआ बताया गया है, न तो वैसे किसी मानवी का जन्म हो सकता है और जैसे रावण के दस सिर बताये गये हैं, न ही वैसे किसी व्यक्ति के दस सिर हो सकते हैं और न ही ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपना सिर नव या दस बार काट-काटकर ब्रह्माजी पर बलि चढ़ा दे और उस कारण से उसको दस सिर मिल जायें, जैसे कि रावण के बारे में कथा में बताया जाता है। इसलिए, इस विचार-धारा के लोग तो कहते हैं कि 'राम कथा' एक आध्यात्मिक कथा है, एक ऐतिहासिक कहानी नहीं है। और आप देखेंगे कि भारत में 'आध्यात्मिक रामायण' नाम से एक ग्रन्थ प्रसिद्ध भी है। महात्मा गांधी जी, जो कि स्वयं एक राम-भक्त थे और जिनके जीवन के अन्तिम क्षणों में भी 'हे राम', 'हे राम', ये शब्द निकले, वह भी रामायण को एक ऐतिहासिक ग्रन्थ न मानकर धार्मिक अथवा आध्यात्मिक ग्रन्थ ही मानते थे, यद्यपि वे राजा राम को मानते थे।

अन्य कई लोग राम कथा को एक ऐतिहासिक घटना तो मानते हैं परन्तु रामायण में वर्णित कुछेक पात्रों के बारे में उनके अपने अलग ही मन्तव्य हैं। उदाहरण के तौर पर वे कहते हैं कि रावण के दस सिर नहीं थे बल्कि रावण के दस सिर उसके चार वेदों और छः शास्त्रों के पाण्डित्य के प्रतीक हैं। इसी प्रकार, वे कहते हैं कि राम की बानर सेना कोई बन्दरों की सेना न थी बल्कि 'बानर' मनुष्यों की ही एक जाति का नाम था जैसे कि आजकल कई गोत्रों के नाम 'कुकरेजा' इत्यादि है।

इन अनेक मत-मतान्तरों के कारण मनुष्य के मन में

परमपिता परमात्मा शिव
'निराकार राम'

यह प्रश्न उठता है कि वास्तव में राम कौन थे और सीता कौन थीं और असल में राम-कहानी क्या है ?

इस विषय में कल्याणकारी परमपिता परमात्मा ने ज्ञानामृत की जो वृष्टि हम अकिञ्चनों पर की है, उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि राम-कथा आध्यात्मिक भी है और ऐतिहासिक भी और कुछ इसमें कवि के अपने भी विचार हैं। अब इस बात को हम कुछ अधिक स्पष्ट करेंगे।

'राम' दो हैं

वास्तव में 'राम' दो हैं—एक तो यहाँ 'दशरथ-सुत 'राम' हुए हैं जो कि एक महान् और पावन राजा थे और जिनके राज्य में प्रजा को अपार सुख था। उन्हें **'मर्यादा पुरुषोत्तम राम'** भी कहा जा सकता है। दूसरे 'राम' वह हैं जो कि सभी आत्माओं के परमपिता हैं, **परम** पुरुष हैं, **परम** पावन हैं, देवों के भी देव हैं तथा 'राम' के भी ईश्वर हैं और, इस कारण, उन्हें **'रामेश्वर'** भी कहा जाता है, जैसे कि दक्षिण भारत में 'रामेश्वरं' नाम के मन्दिर से संकेत मिलता है। परन्तु 'राम-कथा' में निराकार राम (शिव) के चरित्रों को राजा राम के जीवन के साथ जोड़ दिया गया है, इसलिए ही उलझन पैदा हो गई हैं। अतः अब यह जानने की आवश्यकता है कि निराकार राम के साथ सम्बन्धित वृत्तान्त कौनसे-कौनसे हैं और राजा राम के साथ सम्बन्धित वृत्तान्त कौनसे हैं।

'राम' परमात्मा से सम्बन्धित वृत्तान्त

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से निराकार परमात्मा को इसलिए 'राम' कहा गया है कि वह रमणीक अथवा रंजन-कारी हैं, वह आत्माओं को आनन्दित करने वाले हैं। ज्ञान-

वान और योग-युक्त आत्मा ही 'सीता' है क्योंकि वह निराकार राम को वरणा चाहती है। सीता के बारे में यह जो कथा प्रसिद्ध है कि वह 'अयोनिज' थी अर्थात् किसी के गर्भ से पैदा नहीं हुई थी बल्कि खेत में हल की लकीर से पैदा हुई थी, यह भी इसी बात को प्रमाणित करती है कि 'सीता' शब्द ज्ञानवान आत्मा ही का वाचक है क्योंकि गीता अथवा ज्ञान की भाषा में शरीर को 'क्षेत्र' और आत्मा को 'क्षेत्रज्ञ' कहा गया है और इस शब्दावली के अनुसार जब मनुष्यात्मा (क्षेत्रज्ञ) के बुद्धि रूपी क्षेत्र में ज्ञान का हल चलाया जाता है तब उन लकीरों से अर्थात् ज्ञान की पक्की धारणा से सीता (ज्ञानवान आत्मा) का जन्म होता है। यह जन्म किसी माता के गर्भ से नहीं होता क्योंकि यह तो स्वयं 'आत्मा का जन्म' (जाग्रण अथवा पुनरुद्धार) है। इस जन्म को 'मरजीवा जन्म' भी कहा जाता है।

निराकार राम अर्थात् रामेश्वरं (शिव) इस सृष्टि में तब आते हैं जब यह सृष्टि एक काँटेदार बन के समान होती है अर्थात् सभी मनुष्यों का स्वभाव विकारों के कारण परस्पर चुभने वाला होता है और यहाँ न्याय और नियम नहीं होता बल्कि धर्म की ग्लानि होती है। बन-समान अधर्म वाली सृष्टि में ही परमपिता परमात्मा अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। परन्तु प्रभु से प्रीति करने वाली और प्रभु को ही वरणे वाली आत्मा रूपी सीता 'लक्ष्मन रेखा' को जब उलांघ देती है तो 'रावण' उसे चुरा ले जाता है। अर्थात्, ज्ञानवान मनुष्य के मन में लक्ष्य रूपी जो सीमा या रेखा है उसकी परवाह न करके जब-कभी आत्मा मर्यादा का उल्लंघन करती है तो माया उसका अपहरण कर लेती है। धार्मिक चिन्तन के अनुसार 'रावण' माया का प्रतीक है क्योंकि रावण का अर्थ 'रुलाने वाला' है और माया ही मनुष्य को रुलाती है। रावण के दस सिर स्त्री और पुरुष में पाँच-पाँच विकारों के सूचक हैं।

इस दृष्टिकोण से रामकथा के इस प्रसंग का भाव यह है कि ज्ञान पथ पर चलते-चलते अथवा परमात्मा से योगाभ्यास करते-करते जब-कभी मनुष्य का मन लक्ष्य (लक्ष्य-मन) को भूल जाता है और माया रूपी रावण के वशीभूत हो जाता है तब आत्मा 'राम' से बिछड़ जाती है। इस प्रकार, मारीच, शूर्पनखा, खड़-दूषण आदि भी प्रकृति के प्रति आकर्षण तथा काम, क्रोध, हिंसा इत्यादि आसुरी सम्पत्ति के प्रतिक है। ये मनुष्यात्मा के ज्ञान यज्ञ अथवा ईश्वर-योग में उसे पथ-भ्रष्ट करते अथवा हतोत्साहित करते हैं। परन्तु परमात्मा (निराकार राम) के योग (सहयोग) से मनुष्यात्मा इन सभी का अन्त कर सकती है। निराकार राम का आश्रय लेकर ही वह विकारों के बन्धन से अथवा विघ्नों से छूट सकती है क्योंकि माया रूपी दुस्तर रावण का विध्वंस राम के सिवा अन्य कोई नहीं कर सकता। वह निराकार राम ही इस सृष्टि रूपी वन में, बन्दरों के समान विकारी मनुष्यों का एक ज्ञान-युक्त शक्तिदल बनाते हैं और उन द्वारा इस भव सागर को पार करने तथा माया रूपी रावण का नाश करने के लिए एक ज्ञान-सेतु बनाते हैं जिस द्वारा मनुष्यात्माएँ रावण राज्य अथवा माया के प्रभाव का नाश कर देती है।

निराकार राम से जब आत्मा प्रीति करती है अथवा उसके लिए जब पवित्रता का व्रत लेती है और उस राम से ही मिलने के लिए पुरुषार्थ करती है तो आत्मा को अग्नि परीक्षा में से भी पार होना पड़ता है। अर्थात्, **योगिन आत्मा के मार्ग में कई परीक्षाएं और कष्ट भी आते हैं परन्तु आखिर एक दिन उसकी सच्चाई, सच्चाई ही के रूप में निखरती है।** सच्ची राम कहानी का यही सार है। यह आध्यात्मिक भी है और ऐतिहासिक भी है क्योंकि यह सच्चा वृत्तान्त है कि पहले भी रोमेश्वरं परमात्मा (शिव) ने अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को माया रूपी रावण से मुक्त किया था।

इस 'राम कहानी' से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव को अनन्य भाव से याद करें और उनके आश्रय तथा उनकी स्मृति-बल के आधार पर स्वयं को रावण की कैद से अर्थात् विकारों (माया) की जेल से मुक्त करें। इस पुरुषार्थ में, हमारे सामने जनता की ओर से मिथ्या आरोप तथा आतंक होंगे तथा माया के प्रलोभन भी हमारे सामने आयेंगे परन्तु उन सभी को पार करने के लिए हमें तयार रहना चाहिए।

दूसरी राम कहानी

दूसरे जो 'राम' हुए हैं, वह एक प्रसिद्ध राजा थे।

उनका जीवन बहुत ही उज्ज्वल, दिव्य और पवित्र था। वह 'राम' परमात्मा नहीं थे बल्कि एक जीवनमुक्त देवता थे। उन्हें किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न था। उनकी तो जितनी महिमा करें थोड़ी है, परन्तु उनकी प्रजा भी सतोगुणी, दिव्य स्वभाव वाली मर्यादानुसार चलने वाली अहिंसक और सुख-शान्ति सम्पन्न थी। न किसी को देह का कोई दुःख था, न प्रकृति के कोई प्रकोप होते थे, न ही कोई आपदाएँ थीं, न ही लोगों के मन में किसी प्रकार की कोई अशान्ति थी। इसलिए ही रामराज्य का गायन है।

'मर्यादा पुरुषोत्तम राम सीता'

इस 'राम राज्य' की स्थापना 'निराकार राम' अर्थात् परमपिता परमात्मा शिव ने की थी। कलियुग के अन्त में धर्म-ग्लानि के समय अवतरित होकर परमपिता शिव ने मनुष्यात्माओं को जो ईश्वरीय ज्ञान और योग सिखाया था, उन्हें धारण करके पावन बनने वाली मनुष्यात्माओं ने ही अगले कल्प में त्रेतायुग में श्री सीता, श्री राम तथा उनकी प्रजा के रूप में जन्म लिया था और जीवनमुक्ति का अथवा देवपद का अथवा राज्य-भाग्य का सुख पाया था। **राम द्वारा 'शिव धनुष' तोड़ने का वास्तव में यही अर्थ है क्योंकि 'धनुष' वास्तव में पुरुषार्थ का प्रतीक है अथवा वीरता का प्रतीक है। शिव धनुष को तोड़ने का अर्थ है परमात्मा शिव द्वारा सिखाये हुए पुरुषार्थ को अच्छी तरह करना। जैसे आजकल यदि कोई व्यक्ति किसी विद्या में अद्वितीय सफलता प्राप्त करता है तो कहा जाता है कि—'इसने तो रिकार्ड तोड़ दिया है'। इसी प्रकार ऋषि-मुनि तथा अन्य याज्ञिक-योद्धा जिस माया पर विजय प्राप्त न कर सके थे, राम ने ज्ञान-बाणों से उसका वध किया था। इसलिए ही कहा जाता है कि उसने 'शिव धनुष' तोड़ा था। राम को 'धनुषधारी' के रूप में भी इसलिए ही चित्रित किया जाता है कि वह चिरकाल तक आसुरी प्रवृत्तियों से युद्ध करते रहे। अतः पूर्व जन्म में यह पुरुषार्थ करने के फलस्वरूप ही राम को राज्य-भाग्य प्राप्त हुआ था। प्रसिद्ध भी है कि राम ने (वास्तव में पूर्व जन्म में) परमपिता परमात्मा शिव से ईश्वरीय ज्ञान लिया था।**

अतः मालूम रहे कि वास्तव में श्री रामचन्द्रजी की सीता नहीं चुराई गई थीं, न ही उन्हें बनवास मिला था क्योंकि पत्नी का चुराया जाना, बनवास मिलना, हिंसक युद्ध का होना इत्यादि घटनाएँ तो उस व्यक्ति के जीवन में घटित हो सकती हैं जिनका कोई कर्म-भोग, कोई हिसाब-किताब अन्य जीवों से रहा हुआ हो अथवा जो अपूर्ण आत्मा हो। परन्तु श्री राम तो १४ कला सम्पूर्ण पवित्र आत्मा थे और वह सभी कर्म-बन्धनों से मुक्त थे। उनके जीवन में शत्रु, हिंसक व्यक्ति इत्यादि थे ही नहीं। उनके राज्य में भला किसकी मजाल थी कि उनकी धर्म-पत्नी श्री सीताजी को कोई बुरी दृष्टि से भी देख सके? उस काल में तो बुरे संकल्प वाले मनुष्य होते ही न थे बल्कि "यथा राजा-रानी तथा प्रजा" सभी सतोगुणी और पवित्र थे।

अतः श्री राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहने का यह अर्थ नहीं है कि उनके भाई-बान्धवों ने अथवा प्रजा या शत्रुओं ने कोई प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न कर दी जैसे कि कैकेयी या मंथरा ने कर दी अथवा शूर्पनखा या रावण ने कर दी और राम ने मर्यादा को नहीं छोड़ा। बल्कि, उन्हें 'मर्यादापुरुषोत्तम' इस भाव से कहा जाता है कि उन्होंने पूर्व जन्म में परमपिता परमात्मा शिव से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन में दिव्य मर्यादा के संस्कार भरे और फिर 'श्रीराम' नाम से प्रसिद्ध जीवन में पूर्ण मर्यादा में रहे, यहाँ तक कि उनके जीवन में अमर्यादा की परिस्थिति ही उत्पन्न नहीं हुई। उनके उस जीवन में तो कोई अमर्यादा की परिस्थिति उत्पन्न करने वाला था ही नहीं। उनके भाई-बान्धव सभी पावन और दिव्य गुणों वाले थे। राम का कोई शत्रु, कोई निन्दक था ही नहीं। उनके राज्य में सभी मर्यादा का पालन करने वाले थे और वह उन सभी से उत्तम थे, इसलिए ही उन्हें 'मर्यादापुरुषोत्तम' कहा गया है। उनके राज्य में "सब जग सिया राम-मय था।"

विश्व पिता बापू की पुकार

□ब्र.कु. सीमा वर्धा., समाधि

देश के नर-नारियों, युवक-युवतियों, भारत के लालो, भारत मां की क्रंदन ध्वनि को सुनो । इस माता के माथे पर जो पापाचार, भ्रष्टाचार-रूपी कालिख है, उसे धोने के लिए पवित्र बनो । बापू गांधी की समाधि पर श्रद्धा के फूल अर्पित करनेवालो, यह बापू की आत्मा की पुकार है, कि अभी सच्चे स्वराज्य की मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई, अब इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए विश्व के पिता बापू कहते हैं पवित्र बनो ! श्रीकृष्ण के मंदिर में जाकर आरती उतारने वालो, भीतर के कान खोलकर सुनो, तुम्हारी आरती तब तक स्वीकार नहीं हो सकती, जब तक तुम भगवान की पवित्र बनने की आज्ञा को स्वीकार नहीं करते । जाओ, तुम मन को मंदिर बनाओ और वहां से काम की मूर्ति को हटाकर कृष्ण की मूर्ति को स्थापन करो । राम के पुजारियो, अपने आपसे पूछो कि तुम वास्तव में किसके पुजारी हो ? क्या दिन में राम की माला जपकर रात्रि को काम के भक्त बने रहना चाहते हो ? क्या पूजा के लिए देवालय अलग बनाकर घर को अपने लिए वासना भोग का स्थान (एक प्रकार से वैशालय) बनाये रखना चाहते हो ? अब कुछ बदलो, जिसे तुम लोग पावन बनाने के लिये पुकारते आये, 'अब वे घर और संसार को देवालय बनाने आये हैं ?' क्या उस पतित-पावन परमात्मा के इस महान मनोरथ को, विश्व के सच्चे स्वराज्य के लिए, अपने भी कल्याण के लिए उस परमप्रिय परमात्मा को इस एक अंतिम जन्म के थोड़े से समय के लिए भी इतना भी सहयोग नहीं दोगे कि इस निकम्मी चीज़ को छोड़ सको ?

कहते हैं कि जब बाबर ने भारत में लड़ाई लड़ी थी, और उसने अपने सैनिकों को हारते देखा था, तो उसने कहा था—"सिपाहियो और सिपहसालारो, जानबाज़ो और ज़वानों, हम उस अल्लाह को सामने रखकर यह क़सम खाते हैं कि जब तक हम अपनी फतह का झंडा बुलंद नहीं कर देंगे, तब तक हम शराब को हाथ नहीं लगायेंगे ? अत: इसलिए अपने शराब के जाम और शराब के प्यालों को तोड़ दो और इस देश को जीतकर ही दम लो, क्योंकि भगवान सबसे बड़ा है । उसकी महिमा सबसे ऊंची है ? "**अल्लाह-हू-अकबर** ।"

तो अब जबकि हमको काम और उसके समस्त साथियों को परास्त करना है, अपनी इस भारत भूमि को और साथ-साथ पूरे संसार को पांच विकार-रूपी शत्रुओं से आज़ाद कराना है तो स्वयं उस अल्लाह का, उस परमपिता परमात्मा का कहना है कि इस काम रूपी विष के प्याले को तोड़ दो । अब इसके नगमों और गीतों की बात छोड़ दो । और कसम खा लो कि जब तक हमने भ्रष्टाचार को, पापाचार को और विकारों को इस देश से निकाला नहीं है तब तक हमारे लिए आराम हराम है । इसलिए कामविकार और साथ-साथ सभी विकारों रूपी रावण को ईश्वर के रचे ज्ञान-यज्ञ में तथा योग अग्नि में जलाओ । तब ही इस भारत देश तथा संसार में सच्चा रामराज्य आ सकता है ? यही सच्ची दीपावली है । □

गीत

'प्यारा मधुबन'

कितना सुंदर कितना प्यारा, मधुबन ये हमारा है ।
सारे जहां से अच्छा, सारे जहां से न्यारा है ।
कितना सुंदर कितना प्यारा, मधुबन ये हमारा है ।

बजती यहां सुख-चैन की वंशी, ब्रह्मा मुख के द्वारा,
मधुबन की पावन धरती पर, बहती ज्ञान की धारा,
इस मधुबन में परमधाम से, आते सबका सहारा है ।
कितना सुंदर कितना प्यारा, मधुबन ये हमारा है ।

दिव्य फरिश्तों का यह मधुबन, शिवबाबा का प्यारा ।
शिव का ये प्यारा मधुबन है, सबकी आंखों का तारा ।
प्यार के सागर मिलते यहीं पर, जन्मों से जिनको पुकारा है ।
कितना सुंदर कितना प्यारा, मधुबन ये हमारा है ।

दिव्य गुणों की खान है मधुबन, देव भूमि कहलाते ।
भाग्य विधाता इस मधुबन में, सबका भाग्य बनाते ।
हर मानव का यहीं पर आकर, चमका भाग्य सितारा है ।
कितना सुंदर कितना प्यारा, मधुबन ये हमारा है । □

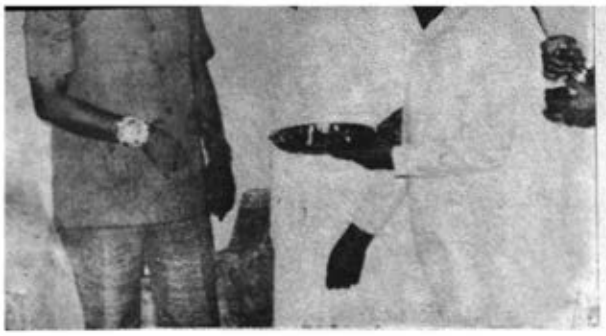

शिमला : में झुकला बहन भ्राता धर्मसिंह राज्यस्व मंत्री हि.प्र. को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए।

पटना : में बी.के. निर्मलपुष्पा भ्राता सरयू मिश्र (मंत्री) सिंचाई एवं धार्मिक न्यास बिहार) को राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

ब्रह्माकुमारी सन्देशी बहन उड़ीसा राज्य के उद्योग मंत्री भ्राता निरंजन पटनायक को पावन राखी बांध रही है।

गुना : सेवाकेन्द्र की ओर से कलेक्टर साहब को राखी बांधने के पश्चात् साहित्य भेंट करते तथा तीन मिनट शान्ति का फार्म देते हुए बी.के. मीनाक्षी।

उदयपुर : के जिलाधीश महोदय भ्राता पी.के. देवजी को निर्मला बहन आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

शिमला : में ब्र.कु.अरुणा जी शिक्षा मंत्री हि.प्र.भ्राता सागरचन्द नायर को राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

भरूच : सब जेल में कैदी भाइयों को राखी बांधती हुई बी.के. सुनिला।

जालन्धर : केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल के लगभग ५० जवानों को राखी बांधते हुए बी.के. राज बहनजी।

चित्रकूटधाम कर्वी : में ब्र.कु. शैला रिक्शा चालकों को राखी बांध रही है।

हुबली : यहां के सब जेल में ब्र.कु. सुनंदाजी कैदियों को राखी बांध रही है।

कोयम्बटूर : में पावन राखी पर्व के अवसर पर बी.के. अन्नपूर्णा बहन कैदियों को राखी बांध रही है।

''नई उमंगें''

□बी.के. सूरज कुमार , आबू

प्रभा—ओमशांति, मधु बहन!

मधु—ओमशांति बहन, कैसी हो प्रभा दीदी:.. ?

प्रभा—बहुत सुंदर... आप सुनाओ, इस वर्ष कैसी चल रही है आपकी तपस्या ?

मधु—जबसे इस वर्ष के लिए ईश्वरीय प्रेरणाएं मिली हैं, मेरी आंतरिक चेतना अधिक जागृत हुई है, परंतु अभी प्यास बुझी नहीं है।

प्रभा—हां, जबसे ये ईश्वरीय वाणी सुनी है, सुंदर प्रवाह चारों ओर दिखाई दे रहा है। प्रत्येक बाबा का बच्चा सब-कुछ समेटकर सब-कुछ पाने में लग गया है।

मधु—हमारे यहां भी सुंदर प्रवाह है, योग-भट्ठियां चल रही हैं, परंतु अभी तक संतोष प्राप्त नहीं हो रहा है। हम भी रोज़ ३.०० बजे प्रातः उठ जाते हैं, परंतु...

प्रभा—यह भी सुंदर लग्न है। परंतु यदि इसके साथ आप कुछ श्रेष्ठ व आनंदित विचारों को भी जोड़ दें तो सोने में सुहागा हो जाए। बहुत आत्माएं योग को तो महत्व दे रही हैं, परंतु श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति को जमा नहीं कर पा रही हैं। इसलिए योग के अनुभव भट्ठियों तक ही सीमित रह जाते हैं, परंतु अब तो आवश्यकता है—जीवन को ही भट्ठी बनाने की।

मधु—हां, कारोबार में गति मंद हो जाती है, बिना ऊंचे संकल्पों के योग में एक ही तरह के अनुभव रह जाते हैं, मन आनंदों में लहरे नहीं मारता। आप इसके बारे में अपने कुछ अनुभव सुनाएं।

प्रभा—उठते ही स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों से भरपूर कर देना चाहिए। इसके लिए एक संकल्प लेकर उस पर थोड़ा चिंतन करना चाहिए। जैसे उठते ही यह संकल्प करें—''मैं इस देह में अवतरित आत्मा हूं।'' इस पर चिंतन करें तो निराला ही अनुभव होगा।

मधु—हां, यह भी सत्य है, परंतु कभी-कभी सवेरे मन इतना शांत होता है कि उसमें विचार प्रवाह चल ही नहीं पाता।

प्रभा—इसके लिए सहज तरीका यह भी है कि सवेरे ही १० मिनट कुछ अव्यक्त महावाक्यों का अध्ययन कर लें, इससे विचारों को एक नवीन प्रवाह प्राप्त हो जायेगा।

मधु—हां, यह विधि तो सुंदर है और भी कुछ संकल्प आप बताइये, जो उठते ही मन को आनंदित करें—

प्रभा—उठते ही इस प्रकार सोचें—

●आह, क्या सुंदर भाग्य है कि मैं आत्मा भगवान से मिलने चली हूं।

●वतन में बैठकर स्वयं भगवान हमारा श्रृंगार कर रहा है।

●भगवान स्वयं सर्व खज़ाने खोलकर हमारे लिए बैठा है, और बुला रहा है कि आओ बच्चे जो चाहे प्राप्त करें।

●शिवबाबा सर्व खजानों से झोली भरने के लिए हमारा आह्वान कर रहा है।

●वतन में हमारा सम्पूर्ण स्वरूप हमारा आह्वान कर रहा है।

●अव्यक्त बाप-दादा वतन में हमें 'सम्पूर्ण भव' 'विजयी भव' और सम्पूर्ण पवित्र भव का तिलक लगा रहे हैं।

●भगवान भाग्य बांट रहा है—उसने अपना सर्वस्व हमें सौंप दिया है।

इस प्रकार चिंतन से मन में अद्भुत आनंद की अनुभूति होगी। मन चुस्त होकर, व्यर्थ से मुक्त होता हुआ स्वयं को भरपूर अनुभव करेगा।

मधु—हां, इस प्रकार का चिंतन अवश्य ही मन को आनंदित करेगा।

प्रभा—इसके अतिरिक्त सुखद पुरुषार्थ की दो अन्य युक्तियां—

प्रतिदिन प्रातः व रात्रि को मन से अपने प्राण-प्यारे परमपिता शिवबाबा को कहें कि—''बाबा, हम आपकी श्रेष्ठ कामनाओं को अवश्य ही पूर्ण करेंगे।'' यह संकल्प अति सुखद अनुभव करायेगा।

मधु—सच प्रभा बहन, बाबा ने हमें कितना योग्य समझा जो हमसे ये श्रेष्ठ कामनाएं कीं। सर्व की कामनाएं पूर्ण करने वाले ने हमसे कामना की—कितना बड़ा भाग्य है यह हमारा।

प्रभा—जैसे यदि एक बच्चा अपने माता-पिता को गौरव से जाकर कहे कि पिताजी, जो आशा आपने मुझसे की है—वह हर कीमत पर मैं पूर्ण करूंगा। तो हम समझ सकते हैं कि उस बच्चे के प्रति मां-बाप का दृष्टिकोण कैसा होगा! वह उनका

सबसे प्यारा और सहयोग का पात्र बन जायेगा । इसी प्रकार अपने प्यारे परमपिता से बार-बार यह कहना—ईश्वरीय प्यार व शक्तियों को खींचने लगेगा ।

मधु—हां, यह तो बड़ी ही सुखद बात है । सचमुच ऐसा होने पर तो बाबा हमारे सभी विघ्नों को हर लेगा ।

प्रभा—हर ही नहीं लेगा मधु बहन, बाबा ने अपने प्यारे बच्चों के अनेक विघ्न तो हर ही लिये हैं । ये थोड़े-बहुत विघ्न तो हमें शक्तिशाली बनाने के लिए हैं ।

मधु—और हां, दूसरी बात भी तो आप सुना रही थीं ।

प्रभा—दूसरी बात—हम सारे दिन में कोई दो समय निश्चित कर लें और यह संकल्प करें कि इन दो समय पर बाबा की दृष्टि घूमते-घूमते मुझपर आ जाती है । उस समय विशेष रूप से योग-युक्त होकर दृष्टि ग्रहण करने लगे तो इससे भी ठीक वैसा ही अनुभव होगा, जैसा कि अव्यक्त बाप-दादा से मिलने से होता है ।

मधु—हां, मैंने तो प्रातः ३.३० बजे व सायं ७.०० बजे के समय निश्चित कर दिये और मैं यही संकल्प करूंगी कि इस समय बाबा की शक्तिशाली दृष्टि मुझपर पड़ रही है ।

प्रभा—हां, मधु बहन, जितना महत्व बाबा इस वर्ष को दे रहे हैं, उतना ही महत्व हमें भी इस समय को देना चाहिए । सचमुच यह वरदानी वर्ष थोड़े ही अभ्यास से ईश्वरीय वरदानों की प्राप्ति करायेगा ।

मधु—हां, प्रभा बहन, बाबा ने कहा कि ये समय राज़ भरा है, कुछ राज प्रत्यक्ष हैं व कुछ राज गुप्त । गुप्त राज़ क्या हो सकते हैं ?

प्रभा—ऐसा ही लगता है कि इस तपस्या के बाद विश्व में विनाश का हाहाकार और ईश्वर की जय-जयकार के अंतिम दृश्य प्रारम्भ होंगे । अर्थात् विश्व के लिए विनाशकाल में प्रवेश और पवित्र आत्माओं का स्वर्णकाल में प्रवेश होगा । भविष्य स्वर्णकाल से पूर्व संगमयुग के स्वर्णकाल में प्रवेश । ईश्वर के साथ उसके अमूल्य रत्नों की भी यहीं जय-जयकार होगी अर्थात् माला के रत्न प्रसिद्ध होंगे । जो किसी के संकल्प में नहीं है, वही प्रसिद्ध होगा—यही राज़ दिखाई देता है ।

मधु—सचमुच समय अति रहस्यमयी गति-से चल रहा है । हमें बहुत कुछ कर लेना चाहिए । मैं भी बहुत अंतर्मुखी हो चुकी हूं । सोचती हूं एक बार फिर इस अंतिम बाजी को जीतने के लिए बीसों नाखूनों का ज़ोर लगा दूं ।

प्रभा—एक श्रेष्ठ पुरुषार्थी को, जिसे विजयी रत्न बनने की इच्छा है और जो दृढ़ साधना करने को तैयार है, जिन्होंने चारों ओर से स्वयं का जाल समेट लिया है, अपने योग-चार्ट को प्रतिदिन ८ घंटे कर देना चाहिए ।

मधु—ईश्वरीय महावाक्य सुनकर मुझे बहुत उमंग आता है कि मैं ऐसी ही योगी बनूं, मैं नहीं करूंगी तो कौन करेगा... परंतु...

प्रभा—इसके लिए पहले तो स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए कि मुझे ही करना है । मैंने ही किया है—कर्म क्षेत्र पर ही यह पूर्णतया सम्भव है । चाहे मुझे कुछ भी त्याग करना पड़े परंतु एक बार अवश्य ही इस श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव करना है ।

मधु—ठीक है मैं तैयार हूं, पूरी तपस्या करूंगी ।

प्रभा—उठकर श्रेष्ठ संकल्पों से स्वयं को सम्पन्न करके, बाबा से रूह-रिहान करें और यह स्मृति दृढ़ करें कि मैं इस देह में—"पवित्रता व शांति का अवतार हूं ।" मुझे इस धरा पर पुनः पवित्रता की स्थापना करनी है ।

फिर योग में बैठकर इस स्थिति का अभ्यास करो कि चारों ओर अथाह प्रकाश फैलाती हुई मैं आत्मा, सर्व-शक्तिवान की शक्तियों के फाउंटेन के नीचे हूं । मानो मैं सतत् इस ईश्वरीय फाउंटेन के नीचे स्नान कर रही हूं ।

फिर ईश्वरीय महावाक्यों के पठन व श्रवण् में ८.०० बजे तक के समय को पूर्ण आनंदित स्थिति में गुज़ारें ।

मधु—ठीक है, मैं समझ गई हम क्या मिस करते हैं । वास्तव में प्रतिदिन हमें अमृत-वेले स्वयं को सम्पन्न व आनंदित कर लेना चाहिए ।

प्रभा—अब इसके बाद कर्म क्षेत्र पर कर्म योगी कैसे बनें ?

मधु—हां, बस यही मुख्य बात है । हम कर्म के बहाव में बहकर कई बार डिस्टर्ब होते हैं ।

प्रभा—वास्तव में मधु बहन, जो योगी कर्म क्षेत्र पर सफल हैं, वही सर्वश्रेष्ठ योगी हैं । तो कर्म हमारे मार्ग में बाधक न पड़े, इसके लिए कर्म क्षेत्र पर निर्विकारी दृष्टि व निरहंकारी वृत्ति को धारण करना चाहिए । ज़रा भी कुदृष्टि या बुद्धि का अहम्, हमारी शक्तियों का क्षय-द्वार बन जाता है । और आत्मा निर्बल होकर या तो टकराव में आ जाती है, या विघ्नों के वश हो जाती है ।

मधु—हां, अब समझ में आ रहा है कि मनुष्य अनेक बहाव में अपने मन के प्रवाह को बार-बार मोड़ देता है । वास्तव में स्वयं का प्रवाह न छूटे—यही ध्यान देने योग्य विषय है ।

प्रभा—इसके लिए दिन में बस ५ बार, केवल एक-एक मिनट के लिए अशरीरी-पन का अभ्यास किया जाये । तो यह नशा आत्मा को बहाव-मुक्त रखेगा । या फिर इसके लिए यह भी युक्ति है कि हमें किसी शक्तिशाली संकल्प का नशा चढ़ा रहे, जैसे "भगवान हमारा मित्र है ।" यह खुदा दोस्त का नशा हमें चारों ओर के प्रभाव से मुक्त रखेगा ।

मधु—हां, यह सम्बंध तो मुझे भी अतिप्रिय है । खुदा—दोस्त शब्द याद आते ही मेरा मन रोमांचित हो जाता है । ओह भगवान हमारा है !

प्रभा—और भी तो सोचो, उसने स्वयं ही तो आकर हमसे दोस्ती की, हाथ मिलाया और कहा—"आओ मेरे प्यारे दोस्त !" तो दोस्ती तो समान से ही की जाती है । उसने हमें अपने समान समझा ।

मधु—वाह...वाह... ! यदि यह नशा चढ़ा रहे कि हम भगवान के समान हैं, फिर तो कहने ही क्या ! सारा पुरुषार्थ पूर्ण हो जाए । कितना शक्तिशाली है यह नशा ।

प्रभा—तो भगवान हमारा मित्र बन गया और सचमुच वह हमसे सच्ची दोस्ती निभा रहा है, पग-पग पर साथ दे रहा है । तो हमें भी तो उससे दोस्ती निभानी होगी ।

मधु—हां, देखो उसने तो वायदा कर लिया है कि मैं सदा तुम्हारे साथ हूं, जब भी याद करो, सहस्र भुजाओं सहित उपस्थित हूं । तो दो मित्र तो सदा ही साथ रहना चाहते हैं । हमें भी तो उसके साथ रहना चाहिए ।

प्रभा—हां, तो बस सारा दिन मित्र बनाकर उसे नीचे उतार लो । और यह स्मृति समर्थ कर दो कि वह अव्यक्त रूप से मेरे साथ है । और मग्न रहो उससे बातें करने में । खाओ भी साथ, सोओ भी साथ, कार्य भी साथ करो । प्रत्येक कठिनाई का हल उससे ही पूछते रहो । सच्चे मित्र पर पूर्ण अधिकार भी होता है, वे एक-दूसरे को सदा ही मदद करते हैं । वें दो नहीं, एक ही होते हैं । अधिकार से उनका सहयोग लेते रहो ।

मधु—सचमुच बड़ा सहज लगता है—इस प्रकार तो ८ घंटा योग-युक्त रहना । शाम को भी मैं ७.००-८.०० बजे विशेष योग में बैठूंगी । रात्रि को प्रतिदिन अपने परममित्र को पत्र भी लिखूंगी और योग का चार्ट लिखकर, यही दिव्य सौगात बाबा को प्रस्तुत करूंगी ।

प्रभा—हां, ऐसी ही सच्ची सौगात कई बच्चे बाबा को दे रहे हैं ।

मधु—और प्रभा बहन, आप यह तो सुनाओ कि आपका आजकल क्या पुरुषार्थ है ।

प्रभा—जब से ये ईश्वरीय महावाक्य सुने—"कि बच्चे मन-मनाभव तो हो गये, अब फरिश्ता सो देवता स्वरूप की स्मृति को समर्थ करो"—तब से इसी स्मृति को समर्थ बनाने का भी अभ्यास चलता है ।

मधु—बहन, न तो अभी हम फ़रिश्ते बने और न देवता—फिर भला यह स्मृति समर्थ कैसे हो । यह तो कल्पना-सी लगती है ।

प्रभा—कल्पना नहीं मधु बहन, यही स्मृति स्वरूप की स्थिति है या दूसरे शब्दों में इसे ही अपने सम्पूर्ण स्वरूप व भविष्य स्वरूप का आह्वान करना कहा जाता है ।

मधु—तो इसका अभ्यास कैसे करें व इससे क्या लाभ होगा ?

प्रभा—पहले तो हम विचार करें कि हमारा सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप कैसा होगा ? वह स्वरूप जो हमें प्राप्त करना है, कल्पना नहीं सत्य है । वह हमारा अंतिम सत्य-स्वरूप, प्रकाश मान कायावाला, चहुँ ओर श्वेत प्रकाश फैलाने वाला होगा । हम मन चक्षु द्वारा देखें कि हमारा वह फ़रिश्ता स्वरूप वतन से धीरे-धीरे नीचे उतर रहा है तथा हमारे सम्मुख आ खड़ा होता है और फिर वह सम्पूर्ण स्वरूप हमारे इस साधारण स्वरूप में प्रवेश कर लेता है । मैं और वह एक हो जाते हैं अर्थात् मैं सम्पूर्ण फ़रिश्ता बन जाता हूं ।

मधु—सच ! अभी मैं ऐसा ही अनुभव कर रही हूं । मैंने समझ लिया कि हमें फ़रिश्ता बनने के अभ्यास के बजाए इस तरह फ़रिश्ता स्वरूप का आह्वान करना चाहिए तो हम सहज ही फ़रिश्ते बन जायेंगे ।

प्रभा—और इस प्रकार हमें अपने भविष्य दिव्य-स्वरूप का आह्वान करना है । ब्रह्मा-बाबा की ही तरह हमें भी यह नारायणी नशा चढ़ा रहे कि ये साधारण देह त्याग कर मुझे इस दिव्य देह में प्रवेश करना है ।

हमें ज्ञात है कि हमारा भावी दैवी स्वरूप, पूर्ण तेज-युक्त व चहुं ओर सुनहरी दिव्यता बिखेरता हुआ है । वह सम्पूर्ण पावन व ताजयुक्त है । ऐसा दिव्य स्वरूप हमारे सामने खड़ा हो । या हम मन चक्षु द्वारा अभ्यास करें कि हमारा वह दिव्य स्वरूप अवतरित होकर हमारे सामने आ खड़ा होता है और फिर वह दिव्य स्वरूप इस साधारण स्वरूप में प्रवेश कर लेता है । अर्थात् मेरी साधारणता दिव्यता में बदल जाती है ।

मधु—अति सुंदर विधि बताई आपने ! इस प्रकार इस स्वरूप में दिव्यता का प्रवेश होगा । एक-एक गुण धारण नहीं करना पड़ेगा ।

प्रभा—और साथ-ही-साथ हमें यह स्मृति भी दृढ़ व समर्थ होती जायेगी कि मैं दिव्य स्वरूप धारी देवता हूं। हमारी इसी समर्थ स्मृति से भक्तों को हमारे दिव्य स्वरूप के साक्षात्कार होंगे। क्योंकि आने वाले समय में सभी भक्तों को उनके इष्टदेव साकार में ही प्राप्त होंगे। इसलिए बाबा ने फरिश्ता सो देवता स्वरूप की स्थिति का समर्थ करने का आदेश दिया है।

मधु—अब मुझे नई रोशनी प्राप्त हुई। और अपने कर्तव्य का भी एहसास हुआ। वास्तव में जीवन स्वाह करके यदि महान उपलब्धि न की तो संसार अवश्य ही हमारे ऊपर हंसेगा कि भगवान को पाकर भी तुमने क्या किया! भगवान ने तुम्हारी पालना की और तुम साधारण ही रह गये!!

प्रभा—आपकी उमंगें फलीभूत हों। आपकी उमंगें अनेकों को उमंग दिलायेगी। ईश्वरीय सहयोग का हाथ सिर पर है। आगे बढ़ो और बढ़ाओ.

मधु—बहुत-बहुत धन्यवाद दीदी! मेरा आना पूर्ण सफल हुआ। अब मैं बाबा को दिव्य स्वरूप की ही सौगात भेंट करूंगी।

प्रभा—आपकी भेंट स्वीकार करके शिवबाबा भी गौरान्वित होंगे। अच्छा फिर मिलेंगे! □

जगत का करने फिर निर्माण

असुर वृति ने चहुं ओर दुनिया में धूम मचाई।
मनोविकारों के कारण है जनता अब घबराई।।
धर्म-भेद और कलहक्लेश ने कर दी खूब तबाही।
झुलस उठी सृष्टि की बगिया ऐसी आग लगाई।।
पावन करने पतित जगत को चल आए भगवान।
जगत का करने फिर निर्माण।।

ब्रह्मा मुख से करें उच्चारण फिर से अमर कहानी।
चमक उठी है फिर से भारत मां की शान पुरानी।।
बार-बार संदेश सुनाते छोड़ो रीति पुरानी।
योगी और पवित्र हो लो होगी नहीं हैरानी।।
नया उजाला लाने को अब दूर करो अभिमान।
जगत का करने फिर निर्माण।।

लेकर शिव से ज्ञान उसे जीवन में लाना होगा।
माया के इन पांच भूतों को दूर भगाना होगा।।
ब्रह्मा वत्स हो ब्राह्मण का कर्तव्य निभाना होगा।
आप जागकर औरों को भी तुम्हें जगाना होगा।।
हर दम अपनी मंजिल का है रखना मन में ध्यान।
जगत का करने फिर निर्माण।।

पवित्र बनकर मैल दिलों की जड़ से दूर भगा दो।
योग अग्नि से पापों के बोझों को आग लगा दो।।
असल नकल की दुनिया वालों को पहचान करा दो।
सृष्टि के कोने-कोने में शिव संदेश पहुंचा दो।।
तब ही हो पाएगा जग में भारत मां का मान।
जगत का करने फिर निर्माण।।

लोक-लाज कुल की मर्यादा स्वार्थ छोड़ना होगा।
मोह माया के रिश्तों से भी मुंह मोड़ना होगा।।
केवल परमपिता शिव से ही योग जोड़ना होगा।
विश्व मोहिनी माया का अब शीश फोड़ना होगा।।
मन वाणी और कर्म नेक हों तब होगा कल्याण।
जगत का करने फिर निर्माण।।

चांदी के टुकड़ों में जो ईमान बेचने वाले।
मीठे बन अज्ञान फैलाएं पर है फनियर काले।।
अपना घर भरने की धुन में रहते जो मतवाले।
ऐसे साधु-संत-गुरु को कह दो होश सम्भाले।।
गगन भेद टंकार सुनाकर पल्टो सबका ध्यान।
जगत का करने फिर निर्माण।।

साईंस द्वारा जिन लोगों ने कर ली खूब तैयारी।
समझो अब तो आने वाली महाविनाश की बारी।।
अंतिम के भी अंत क्षणों में समझो जिम्मेदारी।
कलियुग बीता संगम आया अब सतयुग की बारी।।
फिर भी जो सोने वाले हैं प्रीतम वह नादान।
जगत का करने फिर निर्माण।। □

□ब्र.कु. प्रीतमलाल अश्क,
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-

माऊंट आबू में मिलिट्री के एक ग्रुप को ब्रह्माकुमारी बहनों ने राखी बांधी, चित्र में बी.के. भाई-बहन जवानों के साथ।

नयी दिल्ली : बी.के. भाग बहन राखी बांधने के पश्चात् भ्राता रामानन्द यादव, राज्यमंत्री ग्राम विकास को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए।

सूरत : दक्षिण गुजरात युनीवर्सिटी के कुलपति भ्राता मुकुन्द भाई त्रिवेदी को ब्रह्माकुमारी सोनल राखी बांध रही है।

मद्रास : ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन, भ्राता नलास्वामी (मंत्री हाउसिंग बोर्ड ता.ना.) को पावन राखी बांध रही है।

मुरादनगर : आर्डिनेन्स फैक्ट्री के जनरल मैनेजर भ्राता श्रीवास्तव जी को बी.के. विनोद राखी बांध रही है।

अमृतसर : ब्रह्माकुमारी दादी चन्द्रमणि जी ब्रिगेडियर नाकरा को पावन राखी बांधते हुए।

पटना में मुनिश्री भानु विजय जी को बी.के. नीलम जी स्नेह सूचक राखी बांधते हुए।

पटना : ब्रह्माकुमारी निर्मलपुष्पा, डा. शिवचन्द झा, अध्यक्ष बिहार विधानसभा को पावन राखी बांधते हुए।

बारीधदा में बी.के. सावित्री बहन उद्योगपति भ्राता निलरतन प्रसाद जी को पावन राखी बांधते हुए।

सम्बलपुर : बी.के. पार्वती बहन जिला एन्ड सेशन जज को राखी बांध रही है।

शाहबाद मारकण्डा : बी.के. पीना, भ्राता अदमी जी को राखी बांध रही है।

सम्बल : में सम्बल के सी.ओ. को ब्रह्माकुमारी शीला बहन आत्म-स्मृति का तिलक दे रही है।

जामनगर : बी.के. सुषमा, डी.एस.पी. भ्राता आर.आर. विलियम को पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

फिल्लौर के एस.डी.एम. उगजीत सिंह को बी.के. राजकुमारी राखी बांध रही है।

कोडांगल में पदमा बहन, भ्राता हन्मथराव, मुन्सिफ को पावन राखी बांधते हुए।

सोलापुर : बी.के. सोमप्रभा, भ्राता किशोर देशपाण्डे (महापौर) जी को राखी बांध रही है।

रेवाड़ी में अनोखी बहिन एस.डी.एम. भ्राता संदीप कुमार ढिल्लों को आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

बोकारो : बी.के. कुसुम जी भ्राता समरेश सिंह, विधान सभा के सदस्य को पावन राखी बांध रही हैं।

केन्झोर : ब्रह्माकुमारी त्रिवेणी भ्राता जे.के. देव जिलाधिकारी को राखी बांध रही हैं।

लुधियाना में भ्राता श्यामलाल शर्मा, कमिश्नर कारपोरेशन, बहनों से राखी बंधवाने के बाद प्रसाद लेते हुए।

अमृतसर : बी.के. आदर्श बहन, भ्राता बृजभूषण मेहरा (सदस्य विधान सभा) को राखी बांधने के पश्चात तिलक लगा रही हैं।

रूड़की : बी.के. बिमला, नगर के न्यायाधीश भ्राता रमाकान्त शर्मा को पवित्र राखी का सूत्र बांधते हुए।

तिरुपति - ब्रह्माकुमारी गीता भ्राता सी.एच. वेंकटाचलायथी जिलाधिकारी को राखी बांध रही हैं।

नासिक सेवाकेन्द्र पर डिस्ट्री. एंड सेशन्स जज भ्राता एम.एस. वैद्य अपने विचार लिख रहे हैं।

जगरावां में भ्राता ज्ञानसिंह जी, एस.डी.एम. को राखी बांधते हुए कंचन बहन।

धारवाड़ : बी.के. नीला, भ्राता हर्ष देसाई (उद्योगपति) को पावन राखी बांध रही हैं।

दार्जिलिंग : में बी.के. स्वदर्शन, भ्राता पलजार जी को राखी बांध रही हैं।

शादनगर : बी.के. शोभा, ई. सिनाकोटी (मुन्सिफ मजिस्ट्रेट) को राखी बांधते हुए।

जीन्द में ब्र.कु. विजय बहन एस.एस.पी. पुलिस को पावन राखी बांध रही हैं।

फीरोजपुर-सिटी : ब्रह्माकुमारी तृप्ता, कमिश्नर भ्राता दर्शनलाल जी को राखी बांध रही हैं।

"मैं दुःख क्यों लूं"

□बी.के. उर्मिला., चण्डीगढ़

हम सभी आत्माओं के परमपिता, ज्ञान के सागर शिव अक्सर अपने महावाक्यों में उच्चारते हैं कि अगर किसी के बोल या कर्म या व्यवहार से आपको दुख की, परेशानी की अनुभूति हुई है तो आप उससे नफरत मत करो वरन् उसे रहम की दृष्टि से देखो । बापदादा के इन महावाक्यों के अंतर में एक गहरा तर्क है । मनोवैज्ञानिक कारण है । जब तक हम उस कारण की तह तक नहीं जाते तब तक जानते हुए भी इस पर अमल नहीं कर पाते और चेतन न सही पर अचेतन मन में यह भाव फिर-२ उठता रहता है दुख देने वाले पर रहम कैसे करें ?

इस विषय में सर्वप्रथम जानने योग्य बात है कि जो व्यक्ति स्वयं परेशान होता है वही दूसरे को परेशान करता है, जो स्वयं दुखी होता है, वह दूसरे को दुख देता है । क्योंकि सम्पर्क में आने वालों को वह वही चीज़ तो देगा जो उसके पास है । हम कभी नहीं कहते कि सर्व के कल्याणकारी पिता परमात्मा हमें दुख दे सकते हैं क्योंकि वह सदा सुखों का सागर है, उनके पास दुख का नाम-निशान ही नहीं है जो किसी को दें । देवता भी किसी के लिए कष्टकारी नहीं बनते क्योंकि २१ जन्मों के लिए सुख का साम्राज्य उनके पास है । मानव ही परेशानियों का कारण बनता है क्योंकि वह सदा सुखी नहीं है और इसलिए वह रहम का पात्र है ।

कई प्रश्न पूछते हैं हमने कभी किसी को दुख नहीं दिया, किसी को सताया नहीं परंतु लोग हमें दुख दे जाते हैं, ऐसा क्यों ? इसके उत्तर में ज़रा हम सोचें हम जिस दुनिया में रह रहे हैं वह दुख की दुनिया है या सुख की दुनिया । जवाब होगा यह तो दुखों-से भरी हुई है । तो जैसे बगीचे में जाने से खुशबू बिना मांगे मिल जाती है और जंगल में जाने से कांटे बिना मांगे मिल जाते हैं उसी प्रकार दुख की दुनिया में दुख भी बिना मांगे मिल जाते हैं । लेकिन ज्ञानी मनुष्य ज्ञान के आधार पर कारण जानने से इतना दुखी नहीं होता क्योंकि वह इस स्वाभाविक बात को स्वीकार कर चुका होता है जैसे बताकर कांटा चुभोने से न तो इतना दर्द होता है और न महसूसता आती है ।

इस विषय में मुझे एक घटना याद आती है । जिन दिनों मैं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत थी उन दिनों एक बार बुखार होने के कारण कक्षा में नहीं जा पाई । साथ वाले कमरे की सखी जब मेरे कमरे के आगे से गुजरी तो मैंने उससे पूछा आज टीचर ने क्या करवाया ! परंतु उसके हावभाव से मुझे लगा कि वह मेरे से बात नहीं करना चाहती और आधी ठीक आधी गलत बातें बताकर हां, हूं करके वह चली गई । हमें आए दो-चार दिन ही हुए थे अतः एक-दूसरे के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित भी नहीं थे और हमारे बीच कोई बात भी नहीं हुई थी । बाबा के ज्ञान के आधार पर मुझे उसके इस रूखेपन को देखकर दुख नहीं हुआ । वरन् ख्याल आया हो न हो यह पहले से ही बहुत दुखी है या नीचे किसी से कहा-सुनी करके आई है । मुझे उसके अंतर को टटोलना चाहिए । थोड़ी देर बाद कुछ दूसरी सखियां हालचाल पूछने आ गईं, वह फिर बरामदे में से गुजरी, मैंने बड़े स्नेह से उसे फिर बुला लिया । वह बड़ी सकुचा रही थी । मैंने बाकी बैठी सखियों के आगे उसकी दो-चार विशेषताएं बताई तो वह एकदम पूछ बैठी—"मैंने अभी-अभी आपके साथ गलत ढंग-से बातें की थीं क्या आपको सचमुच महसूस नहीं हुआ ।" फिर उसने बताया कि अभी-अभी घर से एक बुरी खबर आ जाने के कारण मेरा सारा ध्यान उस तरफ था और मैं आपसे ठीक बात नहीं कर पाई ।

ऐसे ही दैनिक जीवन में कितनी ही घटनाएं घट जाती हैं जिनके आप और हम सभी अनुभवी हैं । कई बार दैवी परिवार के साथ कार्य व्यवहार में, सेवाओं में ऐसा हो जाता है । किसी स्नेही भाई या बहन के स्नेह से न बोलने पर, मीठा व्यवहार न करने पर जैसा कि आप उससे अपेक्षा रखते हैं, मन में गांठ आ जाती है या हीनभावना और नफरत पैदा हो जाती है कि इसको तो मेरे से स्नेह ही नहीं है । परंतु यह हमारी भावना होती है । ऐसे समय पर भावुक न बनकर ज्ञानी तू आत्मा बनकर इसके कारण को जानने की कोशिश करें कि इससे ऐसा क्यों हुआ ? और हमें पता चलेगा कि अमुक भाई या बहन या तो किसी अति आवश्यक कार्य की जल्दी में था या दूसरे किसी की बात का समाधान करने में लगा था या अन्य किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार कर रहा था जिसके कारण उसके व्यवहार में थोड़ा-सा फरक आ गया । सामान्य व्यवहार में आने पर हम उससे स्नेह से पूछें तो वह कारण बता भी देगा । कहने का भाव यह है कि ऐसी छोटी-छोटी बातों में हम क्या, क्यों करके संकल्प खराब न करें । हम केवल यही न सोचें बाबा ने कहा है, "दुख न दो ।" तो इसने मुझे दुख क्यों दिया वरन् यह भी सोचें बाबा ने यह भी तो कहा है "दुख न लो ।" अतः मैं दुख क्यों लूं ? □

आध्यात्मिक प्रगति का आधार निर्भयता

□ब्रह्माकुमारी दुर्गेश नंदिनी, सिंगरौली (सीधी)

इस चराचर जगत में हर प्राणी मात्र के लिए जीवन अस्तित्व की स्थापना तथा उसकी सुरक्षा करना बहुत जरूरी है। क्योंकि दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर भी संसार में "चुने हुए प्राणी" (Selective animals) ही अपना अस्तित्व स्थापन कर पाते हैं जिन्हें "योग्य प्राणियों का संरक्षण" (Survival of the fitest) कहा जाता है। साथ ही यह भी स्पष्ट तथ्य है कि इस जीवन मार्ग में हर मानव को जन्म से लेकर इहलीला की समाप्ति तक जीवन के विभिन्न पहलुओं से होकर गुज़रना पड़ता है। उसे कई परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होती हैं क्योंकि इस अविनाशी सृष्टि नाटक में परिस्थितियां, ऋतुएं और दिन-रात समयानुसार बदलते रहते हैं। कुल मिलाकर सारा जीवन उतार व चढ़ाव से पूर्ण गहन घाटियों की तरह है। जिसमें निर्भयता के साथ जीवन रक्षा के हेतु संघर्षरत रहना अति आवश्यक है। कहा भी जाता है "संघर्ष ही जीवन है" (Struggle is the life)

संसार के समस्त महापुरुष राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, धर्म-स्थापक सभी निर्भयता की शक्ति से सतत यत्नशील रहकर ही अपने जीवन के महानतम लक्ष्य की प्रतिपूर्ति कर पाए हैं। काश वो परिस्थितियों से, सामाजिक उपेक्षा व अवहेलना से, निंदा या अपमान से डर गए होते, पीछे हट गये होते तो शायद आज संसार में उनका नाम ही न होता। हिमालय व चांद की चढ़ाई करने का साहस कोई भीरू व्यक्ति स्वप्न में भी नहीं कर सकता। निर्भयता की शक्ति से ही नेपोलियन बोनापार्ट छोटे-से सिपाही से विश्व का तानाशाह बन गया।

अतएव आध्यात्म से निर्भयता को युग्मित करने से पूर्व हम यह विचार करें कि (१) **निर्भयता की आवश्यकता क्यों है** ? बालक के जन्म से लेकर अध्ययन एवं जीवन निर्वाह में समय-समय पर निर्णय शक्ति, सहन-शक्ति और सामना करने की शक्ति की आवश्यकता होती है। उसके जीवन का विकास और विस्तार तब तक नहीं हो सकता जब तक उसमें निर्भयता नहीं आजाती। इसी प्रकार हिंसा, चोरी या अन्य किसी अपराध में भी निर्भयता तो देखने को मिलती है परंतु यह निर्भयता का कुत्सित रूप है। अतएव यह कहना उचित होगा कि जीवन में सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष में सापेक्ष और निरपेक्ष दोनों ही बिंदुओं से जहां असफलता महसूस होती है निश्चित रूप से वहां भय, लज्जा, संकोच, मनोबलहीनता मानसिक कुंठा या कोई कमज़ोरी दृष्टिगत होती है। मनोवैज्ञानिक रूप से मुंह को छिपाना, सन्मुख बात न करना परिस्थितियों से घबराना, उत्साह-हीन बनना, किसी से प्रभावित हो जाना, किसी से भयभीत हो जाना अथवा किसी से छिपाव करना यह सब निर्भयता की कमी जाहिर करते हैं। तथा जीवन पलायन की ओर ले जाते हैं।

2. **निर्भयता के कमी के कारण तथा उससे होने वाली हानियां**:—(अ) भय का कारण सदैव मनुष्य की कोई-न-कोई मानसिक या शारीरिक कमज़ोरी होती है। परंतु देखने में आता है कि शारीरिक दृष्टिकोण से हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति भी कई बार भयभीत नज़र आता है। जिसकी वजह आत्मा की दुर्बलता या संकल्पों की कमजोरी है।भयभीत व्यक्ति में निम्न त्रुटियां नज़र आएंगी। देहाभिमानी होगा फलतः लज्जा, छिपाव, बात को झुठलाना, शंका, पूर्वापेक्षा व अनुमान उसकी मूल कमजोरी होगी। वह स्वयं को भी शंकालु दृष्टिकोण से देखता हुआ पुरुषार्थहीन बन कर्म में आस्थावान नहीं बन पाता। (ब) भयभीत आत्मा सदा कमजोर संगठन व कायर आत्माओं के संग में रहने वाली होगी। (स) ऐसी कमजोर आत्मा निराशावादी व व्यर्थ चिंतन वाली होगी उसमें शुभ-चिंतन और मनन की शक्ति की कमी होने के कारण भय का भूत समय-समय पर जागृत होता रहेगा। (द) वह जीवन में कभी भी निराधार व आरूढ़ नहीं बन सकती। उसे सदा सहारों के टूटने का भय, प्रेम, मान-सम्मान, स्थूल और सूक्ष्म अप्राप्तियों का भय रहेगा। वह सम्भावनाओं के आधार से चलेगी और सम्भावनाएं खत्म होने पर थक जाएंगी। उसकी शुभ भावनाएं दुर्भावनाओं में बदल जाएंगी। भय के कारण निम्न हानियां हो

सकती है:—(१) भयभीत व्यक्ति सर्व-शक्तियां, गुण एवं कलाएं होते हुए भी उनका स्वछंद प्रदर्शन करने से सर्वथा वंचित रह जाती है। जिससे उसकी योग्यताओं का न तो विकास होता है न ही अन्य व्यक्ति ही उससे लाभ उठा सकता है। (२) भयवश वह अपने द्वारा किये गये विकर्म अथवा भूलों को छिपाकर रखता है। किसी के सामने व्यक्त नहीं करना चाहता फलतः वह उचित मार्गदर्शन से वंचित रह जाता है। साथ ही मनोबल-हीनता के कारण स्वयं भी स्वयं की कमजोरियों का सहज परिवर्तन नहीं कर पाता। (३) यदि भय अधिक है तो वह अधिकार व कर्तव्य दोनों से वंचित कर देता है। हमारी ही वस्तु, हमारे ही हाथ से भय के कारण निकल जाती है। (४) भयभीत व्यक्ति अपने लक्ष्य से पीछे हट जाता है। उसमें संघर्ष करने, प्रताड़नाओं, सामाजिक उपेक्षा, अवहेलना व अवमाननाओं को सहन करने की शक्ति नहीं होती। (५) अतएव वह आत्म निश्चयन से डिग जाता है, उसके मन में संशय और अनुमान का बीजारोपण शीघ्र ही हो जाता है। वह सच्चाई और सफाई नहीं रख पाता।

आध्यात्मिक जीवन और निर्भयता एक-दूसरे के समपूरक और समयुग्मित कारक हैं। दूसरे शब्दों में **निर्भयता बिना आध्यात्मिक यात्रा अधूरी है**। धार्मिक साधनाओं में लीन महापुरुषों, भक्तों व सत्य के साधकों की भांति आध्यात्म-अभ्यासियों अथवा आत्मा के अध्ययन में तत्पर व्यक्तियों के लिए निर्भयता परम आवश्यक है। आत्मिक स्थिति के बिना मनोबल में शक्ति का संचार नहीं होता तथा बिना शक्ति वाली आत्मा सामाजिक और व्यावहारिक समस्याओं और उलझनों को पार नहीं कर सकती। वह दुर्जय घटनाओं का सामना नहीं कर सकती। और सामना न कर सकने वाली आत्मा कभी भी अविनाशी निर्बंधन, निर्विघ्न और निराधार नहीं बन सकती। क्योंकि आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप में शक्ति स्वरूप है, निर्भय है, अजर है, अमर है और अविनाशी है। आत्मा को काल नहीं खाता, जल नहीं डुबाता फिर भय कैसा। अतएव आध्यात्मिक मार्गियों को आत्मज्ञान और आत्मा के मौलिक गुणों की महीनता और गहनता में जाकर आत्मा में शक्ति का सृजन करना चाहिए तभी आत्मा अचल अडोल बन सकती है। इस आत्मिक अभ्यास में अथवा निर्भयता की साधना में निम्न तथ्य अधिक प्रभाव डालते हैं:—

1. आत्माभिमानी स्मृति, दृष्टि व वृत्ति:—देखने में आता है कि जब तक आत्मिक दृष्टिकोण व वृत्ति नहीं तब तक स्त्री और पुरुष परस्पर वार्तालाप करने में भी घबराते हैं या छिपते हैं। आत्मिक भाव न होने और आत्मा की अविनाशिता के अज्ञान के कारण ही अर्जुन अपने संबंधियों और स्वजनों के मोह में फंसा रहा। उसमें मोह, स्वार्थ, बार-बार उभरकर आता रहा। परंतु दृढ़ आत्म-निश्चयी बनने पर नष्टोमोह बना। क्योंकि फिर उसे ज्ञान हो गया कि आत्मा तो मरती नहीं है और मेरा साथी तो ईश्वर है।

2. पवित्रता:—आध्यात्मिक मार्ग में मन, वचन और कर्म की सम्पूर्ण पवित्रता परम आवश्यक है। इसके अभाव में संकल्पों की शक्ति, वाणी में ओज, दृष्टि में तेज और कर्म में सफलता की प्राप्ति कदाचित सम्भव नहीं है। अपवित्र विचार से भाव किसी भी प्रकार के व्यर्थ, साधारण या विकारी अथवा निष्क्रिय संकल्पों से है। मानसिक स्थिरता (जड़ता) भी अपवित्रता है क्योंकि यह धीरे-धीरे लक्ष्य से पीछे हटा देती है। तथा पूर्वापेक्षा और भय को जन्म देती है। इसके विपरीत पवि· विचारधारा और स्वस्थ मनोदशा निर्भीक, निष्पक्ष और स्वतंत्र विचारवादी तथा सत्य भाषी बनाती है। ऐसा व्यक्ति न कभी झुकता है न कभी रुकता है। ईश्वरीय ज्ञान व आध्यात्म की यथार्थता का बोध शक्ति स्वरूप बन ऐसी ही निर्भीक आत्मा करा सकती है। वह मान-अपमान, शंका-अनुमान, आक्षेप और आरोपों से अप्रभावित निर्बाध रूप से आध्यात्म पथ पर लक्ष्योन्मुख रहती है।

3. सच्चाई और सफाई:—जैसा कि पूर्व में कह चुके हैं कि मनुष्य की स्वयं की त्रुटियां ही उसे भयभीत करती हैं अथवा मन को खाती हैं। इसलिए ईश्वरीय मार्ग में चलने वाले हर साधक को अपने द्वारा की गई भूलों, पाप-कर्मों को स्पष्ट रूप से बड़ों के आगे या ईश्वर के आगे वर्णन करके सच्चाई और सफाई द्वारा मनसा की शुद्धि कर लेनी चाहिए। उसे ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं के प्रति ईमानदार व दृढ़ प्रतिज्ञ रहने की आवश्यकता है। परमात्मा का भी यह संकेत है यदि संकल्प में त्याग और दृढ़ता भरी हो तो धारणा सहज हो सकती है।

4. सर्व-संबंध एक ईश्वर से:—जैसा कहते हैं कि "जिसका साथी है भगवान उसका क्या करेगा आंधी और तूफान।" इस उक्ति से यह सिद्ध है कि अगर हम ईश्वर प्राप्ति के बाद भी अन्य किसी दैहिक आत्मा को आधार बनाते हैं उससे गहन संबंध जोड़ते हैं तो ईश्वर से हमारा संबंध ढीला हो जाता है। परंतु एक परमात्मा के बल, भरोसे पर कार्य करने वाली, उससे ही सर्व-संबंध निभाने वाली आत्मा लोक-

लाज आदि सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक बंधनों के भय से दूर हो जाती है और निर्भय और निर्विघ्न होकर सतत सफलता प्राप्त करती जाती है।

5. श्रीमत् का सत्य पालन:—सामान्य रूप से यही कहा जाता है कि किसी कार्य से पूर्व बड़ों की राय लेना उदाहरणार्थ अच्छा होता है। सीता ने जब श्रीमतरूपी लक्ष्मण-रेखा को लांघा तो वह रावण की भयानक छाया की गिरफ्त में आ गई तथा राम की छत्रछाया और सुरक्षा से परे चली गई। उसी प्रकार हम ईश्वरीय ज्ञान के साधकों को भी परमात्मा द्वारा या निमित्त बड़ों द्वारा समय-प्रति-समय जो शिक्षा सावधानियां या श्रीमत मिलती है उसका हमें निर्संकल्प होकर दृढ़ता से पालन करना चाहिए भले ही उसमें कुछ कठिनाइयां उठानी पड़ें या वह बात स्वयं को या जन सामान्य को अच्छी न लगे। तभी हम निर्भयता से भरपूर उमंग से व स्वतंत्र मन से आध्यात्मिक मार्ग में सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। श्रीमत के उल्लंघन से मन सदा खाता रहता है। परंतु श्रीमत पालन करने वालों को बाबा स्वत: ही अभय वरदान दे देता है। माया के पांच विकार या अन्य कोई आसुरी आत्माएं ऐसे आज्ञाकारी वत्सों पर अपना प्रभाव नहीं जमा पातीं।

6. कर्म इंद्रियों की सूक्ष्म चेकिंग:—सूक्ष्म रीति से यदि विचार करें तो आंख, कान आदि हमारी इंद्रियों के द्वारा ही अनेक प्रकार की कमज़ोरियां अंदर प्रवेश कर जाती हैं इसलिए समर्थ बुद्धि द्वारा हमें अपने मन और इन इंद्रियों पर एक प्रहरी बन नियंत्रण करना आवश्यक है। तथा सदैव व्यर्थ चिंतन, व्यर्थ दर्शन अथवा व्यर्थ श्रवण (निन्दा, चुगली, परचिंतन आदि) से सर्वथा स्वयं को दूर रखना चाहिए। क्योंकि यह चोर यदि मन में प्रवेश कर गया तो ऐसी आत्मा अंदर-अंदर रूग्न व शक्तिहीन होती जाती है। उसका उत्साह व खुशी गुम हो जाती है।

इस प्रकार उपरोक्त सभी बिंदुओं को ध्यानार्गत रखते हुए निष्कर्षत: यह कहना उचित होगा कि ईश्वरीय मार्ग की सफलता निर्भयता द्वारा ही सम्भव है। दूसरे शब्दों में **"आध्यात्मिक साधना हेतु निर्भयता एक अमोघ-शक्ति है।"** □

बाबा के बच्चे

□ब्र.कु. अ.कु.रा.ला. श्रीवास्तव, रायपुर

तन कोमल
मन निर्मल
वाणी उससे भी कोमल
बाबा की मुरली से
छाये रहते
मुख पर
खुशी के बादल ।१।

कोमल काया
न दुख की छाया
सफेद बाना
सबको अपना माना ।
हंस की चाल से
चलते देख
चकित होती यह दुनिया
पल-पल ।।३।।

मीठी दृष्टि
प्यारी दृष्टि
करते सब पर
सुखों की दृष्टि वृष्टि
बाबा की मुरली से
जलते मन को
करते शीतल ।।२।।

उमंग भरा
उत्साह भरा
हर पल जिनका
रहता हरा ।
बाबा के ज्ञान को
मीठी वाणी से
बांटें
हर पल ।।४।।

ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार-पवित्रता

□ब्र.कु. संजय आबू

पवित्रता प्राणों से प्यारी, ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार ।
परमपिता से संगमयुग में हमने यह पाया उपहार ।।

जन्म-जन्म के झूठे तन का मोह मिटा, जब ज्ञान मिला,
मैं हूं, शुद्ध-प्रबुद्ध आत्मा, जबसे यह पहिचान मिला ।

पवित्रता के सागर शिव से मन की सारी मिली है तार,
परमपिता से संगमयुग में हमने यह पाया उपहार ।

जबसे देखा नैन नूरानी, सूरत पर वह झलक सुहानी,
नहीं भूलती छवि सुहानी, भूल गयी पर दुनिया पुरानी ।

अतीन्द्रिय सुख में झूमा मन, जीवन का जो सच्चा सार,
परमपिता से संगमयुग में हमने यह पाया उपहार ।

'मेरा बाबा' कहते पाया 'मीठे-बच्चे' की पुचकार,
प्यार प्रभु का पाया सबने मधुर-मनोरम-स्नेह दुलार ।

दिव्य-अलौकिक जीवन अपना बना जन्मसिद्ध अधिकार,
परमपिता से संगमयुग में हमने यह पाया उपहार । □

फिरोजपुर कैन्ट : में डी.सी. इन्द्रजीत सिंह को बी.के. उषा स्नेह सूचक राखी बांध रही है।

विशाखापट्टनम : में भारत एकता शान्ति रैली का आयोजन स्वतंत्रता दिवस के दिन किया गया था। उस अवसर पर बी.के. बहनों के साथ अन्य सभी धर्मों के प्रमुख लोगों ने भाग लिया।

आदमपुर : श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर बी.के. तारामाता विंग कमाण्डर रव्या भाई को श्रीकृष्ण का चित्र सौगात में दे रही है।

मालवीय नगर (नयी दिल्ली) : सेवाकेन्द्र की ओर से एक सार्वजनिक प्रोग्राम रक्षा-बंधन के अवसर पर रखा गया था, यह चित्र उसी अवसर का है।

अलीगढ़ : में पुलिस अधीक्षक भ्राता जी.एल. शर्मा राखी बंधवाने के पश्चात् बी.के. भाई बहिनों के साथ।

महबूबनगर : में रक्षा बंधन के सार्वजनिक कार्यक्रम में वहां के शासक भ्राता पी. चंद्रशेखर प्रवचन कर रहे है।

बंगलौर : में निर्मला बहन भ्राता पोचवा (डी.एस.पी.) को पावन राखी बांध रही हैं, साथ में डायरेक्टर (कर्नाटका स्टेट लाटरीज़, बंगलौर) भ्राता मुरलीधर जी बैठे हैं।

सीकर : सेवाकेन्द्र पर जिलाधीश, ए.एस.पी., ब्रांच मैनेजर, बैंक मैनेजर आदि आदि को राखी बांधने के पश्चात् कुछ मिनट शान्ति का धन लेते हुए।

शुजालपुर मण्डी : रक्षा-बंधन के कार्यक्रम के पश्चात् भ्राता तिवारीजी एस.डी.ओ.पी. एवं नगर के गणमान्य व्यक्तियों को ब्र.कु. भावना बहन प्रदर्शनी समझा रही हैं।

वर्धा : में मुख्य पोस्ट आफिस में रक्षा-बंधन बांधने के पश्चात् वहां के कर्मचारी शान्ति पत्रक भर रहे हैं, साथ में ब्र.कु. शोभा राखी बांध रही है।

बेलगाम : में राखी बांधने के पश्चात् ब्रह्माकुमारी बहनें लायंस क्लब के प्रेसीडेन्ट, सेक्रेटरी व अन्य सदस्यों के साथ खड़ी है।

कार्कला : सेवाकेन्द्र पर स्वर्ण महोत्सव और रक्षा-बंधन के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. निर्मला व अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति दिखाई दे रहे

शांति की चाह

□ब्र.कु. राजेंद्र ललावत., उज्जैन

जिस प्रकार रेगिस्तान में पानी का कहीं नामोनिशान नहीं होता एवं वहां पर भटकता हुआ मानव पानी की चाह में व्याकुल होता रहता है। ठीक उसी प्रकार वर्तमान संसार अशांति का रेगिस्तान बन गया है, जहां पर कि मानव ''शांति की चाह'' में भटकता हुआ व्याकुल होता जा रहा है। लेकिन उसकी शांति की चाह पूरी हो ही नहीं पा रही है अर्थात् शांति उसके लिये मृगमरीचिका बनी हुई है। अशांति के इस रेगिस्तान में उसकी शांति की चाह पूरी होने की बात तो दूर रही, बल्कि वह दिन-प्रतिदिन अशांति के गर्त में डूबता चला जा रहा है। जैसे किसी जाल में फंसा हुआ जानवर जितना उससे निकलने की कोशिश करता है, उतना ही उसमें उलझता जाता है। ठीक उसी प्रकार आज का मानव अशांति के जंजाल में फंसा हुआ है, वह जितनी कोशिश उसमें से निकलने की करता है, उतना ही ज्यादा अशांति से ग्रसित होता जा रहा है। इस भयानक अशांति की स्थिति में सम्पूर्ण मानवता शांति के लिए त्राहि-त्राहि कर उठी है। चारों ओर से आवाज आ रही है—''शांति...शांति...शांति।'' इसी सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष घोषित किया है।

प्रश्न उठता है कि अशांति की यह विकट स्थिति क्यों निर्मित हुई? आज का मानव अशांति से त्रस्त क्यों है? विद्यमान समाज में अशांति का धुआं क्यों उठ रहा है? विभिन्न देशों में अशांति की आग क्यों सुलग रही है और कुल मिलाकर सारा विश्व अशांति के दौर से क्योंकर गुजर रहा है? इन सब बातों पर यदि हम गहराई-से विचार करें, तो निष्कर्ष सामने आता है कि समाज की अशांति, देश की अशांति, विश्व की अशांति एवं यहां तक कि स्वयं मानव की अशांति के लिये जो तत्व जिम्मेदार हैं—वह स्वयं मानव ही है। मानव ने जो अशांति के बीज बोये, वह बीज आज जब विशाल वृक्ष बनकर चारों ओर अशांति की छाया फैला रहा है, तो मानव स्वयं ही परेशान हो रहा है। वह अशांति के उस विशाल वृक्ष को नहीं काट पा रहा है, जिसके बीज उसने स्वयं बोये हैं। अशांति के बीज बोने के बाद आज का मानव शांति की चाह लिये बैठा है—कैसी हास्यास्पद एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति है। यहां पर वही कहावत चरितार्थ होती है कि—''**बोये बीज बबूल के आम कहां से पाये।**'' ?

अशांति की यह जो विकट स्थिति आज दिखाई दे रही है, वह कोई अचानक ही नहीं हुई है। यह अशांति का वृक्ष शनैः-शनैः ही क्रमिक रूप से पुष्पित एवं पल्लवित हुआ है। अशांति की इस स्थिति को समझने के लिये हमें कुछ पीछे की ओर चलना होगा। कहा जाता है कि ईसा से ३००० वर्ष पूर्व की जो स्थिति थी, उसके अनुसार दुनिया को हैविन अथवा पैराडाइज़ (स्वर्ग) कहा जाता था। इस प्रकार उस समय रामराज्य था, हैविन अथवा पैराडाइज़ था तो वहां पर किसी भी प्रकार की अशांति होने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता और वास्तविकता भी यही है। क्योंकि वह सतयुग-त्रेतायुग का समय था, जो कि स्वर्णिम-काल कहलाता था। वह दैवी राज्य था जहां पर कि मानव आपसी स्वार्थों से ऊपर उठकर शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था। अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अथवा ईर्ष्या, द्वेष आदि बुराइयां वहां पर नहीं थीं। इसी कारण वहां शांति का वृक्ष अपनी शांति की छाया फैला रहा था।

अब आज की जो अशांति की स्थिति दिखाई दे रही है, इसकी शुरुआत होती है वहां से जब मानव ने अपने-आपसी स्वार्थों को गले लगाना शुरू कर दिया अर्थात् काम, क्रोध अथवा ईर्ष्या, द्वेष आदि जो अशांति के दूत हैं, उनसे हाथ मिलाकर अशांति के बीज बो दिये और इस प्रकार अशांति का एक अनवरत सिलसिला शुरू हो गया। आप ध्यान दीजिये कि सबसे पहले स्वार्थ के रूप में अशांति के बीज बोये गये थे और आज वही स्वार्थ व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अशांति को बढ़ावा देने में सबसे ज्यादा सहायक सिद्ध हो रहा है।

यदि आप विश्लेषात्मक रूप से देखें तो निर्विवाद रूप से सिद्ध पायेंगे कि आज विश्व की हर अशांति की स्थिति अथवा समस्या के लिये यही काम-क्रोधादि बुराइयां जिम्मेदार हैं। इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता, जातिभेद, रंगभेद, भाषाभेद आदि भी अशांति की स्थिति को निर्मित करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। और जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है—इन सबके पीछे जो तत्व सबसे ज्यादा जिम्मेदार है, वह स्वयं मानव ही है।

अब आते हैं अशांति की समाधानकारक स्थिति की ओर। एक पुरानी कहावत है कि मृग कस्तूरी की खुशबू से आनंदित होकर ढूंढ़ता रहता है कि कस्तूरी कहां है? जबकि उसे यह

नहीं मालूम रहता कि कस्तूरी तो उसी के शरीर में है । यही स्थिति आज के मानव की है, जो वह शांति की चाह लिये चारों ओर भटक रहा है । वह यह नहीं जानता कि शांति तो उसी के अंदर है । शांति मानव का स्वधर्म है, उसकी आत्मा का एक मुख्य गुण शांति-स्वरूप है । इसी शांति के स्वरूप को उसने स्वार्थ की परतों के अंदर छिपा दिया है । यदि आज विश्व का हर मानव अपने स्वार्थों एवं बुराइयों से ऊपर उठकर अपने अंतर्मन में झांकेगा, तो निश्चय ही उसे अपने वास्तविक शांत-स्वरूप की झलक दिखाई देगी, उसे अपने अंदर शांति का असीम सैलाब नज़र आवेगा । इस प्रकार वह अपने अंतर्मन की ज्योति जगाकर स्वदर्शन करेगा, तो वह अशांति के उस विशाल वृक्ष को अवश्य ही धराशयी कर देगा, जिसके बीज उसने स्वयं ही बोये थे, जिसे उसने पुष्पित एवं पल्लवित किया था । और इस प्रकार उसकी ''शांति की चाह'' अवश्य ही पूरी हो जावेगी ।

मानव के अंतर्मन की ज्योति जगाकर, उसे उसके शांत-स्वरूप गुण की अनुभूति कराकर उसकी शांति की चाह पूरी करने के लिये ही अपने अनेकानेक सेवाकेंद्रों के माध्यम से सतत रूप से प्रयत्नशील है—''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय'' यह विश्वविद्यालय अपने-आपमें एक शांति कुंड है, जो सभी धर्मों का सारांश लेकर अपनी विशाल आध्यात्मिक शिक्षाओं के द्वारा एवं राजयोग के सूक्ष्म प्रकम्पनों के माध्यम से शांति की मंज़िल को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है ।

''हमारा कर्त्तव्य''

□ब्रह्माकुमारी सूरजमुखी., आगरा

जबकि विश्व में चारों ओर हाहाकार सुनाई दे रहा है, अशांति व दुखों के सघन काले बादल मानव मन पर छा गये हैं, विकारों की आंधियों से नर बेघर हो चुका है, प्रेम का दीपक बुझ चुका है, राक्षसी प्रवृत्तियां पनप चुकी हैं । धर्म हिंसा सिखा रहा है, शिक्षा नास्तिक बना रही है, उपदेश देश की आग भड़का रहे हैं, सम्पूर्ण विश्व में युद्ध की स्थिति विकराल रूप ले रही है । अंतर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ चुका है, शस्त्रों की होड़ मनुष्य को **विनाशकाले विपरीत बुद्धि बना रही है**...तब हम आत्माओं का कर्त्तव्य है...

हमारे कर्त्तव्य

एक ओर हम ज्ञानयुक्त व योगयुक्त आत्माएं हैं दूसरी ओर हम सबके रक्षक, हम सबके प्यारे पिता ने हमें हमारे कर्त्तव्य याद दिलाये हैं—ये कर्त्तव्य याद दिलाना ही हम सभी रूहों के दीपक जगाना है । परंतु आवश्यकता है—हम सभी भगवान की आशाओं व अपने महान कर्त्तव्यों से परिचित हों जो इस प्रकार हैं:—

(१) परमपिता परमात्मा हमसे चाहते हैं कि हमारी आत्मिक ज्योति सदा जगी रहे—जो विश्व का अंधकार दूर हो, मनुष्यों को ईश्वरीय पथ स्वीकार हो... प्रकाश की किरण प्राप्त हो ।

●हमारा कर्त्तव्य है हम प्रकाश पुंज बनकर सभी को उनका मार्गदर्शन करायें और शीघ्र ही सर्वगुण सम्पन्न बनें कि आसुरी प्रवृत्ति व दुख अशांति का सदा के लिये अंत हो जाये ।

●हम सम्पूर्ण पवित्र बनें कि भारत भूमि पर पवित्रता की गंगा बह चले और यही भूमि देवभूमि कहलाये । विकारों की गन्दगी पावन चैतन्य पुष्पों की सुगंध से सदा के लिये समाप्त हो जाये । धरा-वसुंधरा बन जाये ।

●याद रहे हमारी सम्पूर्णता ही विश्व के अंधकार को दूर करेगी, हमारी सम्पूर्ण पवित्रता विश्व के कष्ट हरेगी ।

●हमारी सत्यता—सभी को सत्य राह दिखायेगी, परमात्मा का सत्य परिचय देगी । हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने आदि-अनादि पवित्र स्वरूप को पहचानते रहें... तो शीघ्र ही मनुष्य अपने परमपिता को पहचान लेंगे... जिन्होंने हमें हमारे सत्य स्वरूप की पहचान दी ।

●जिसके लिए जीवन बलिदान किया है उसकी सदैव आज्ञाओं का पालन करते रहें, उसकी आशाओं के दीप बनकर सदैव जलते रहें ।

●हमारी पवित्रता की शक्ति से, मधुरवाणी से निश्चिंत जीवन से सभी का मुख परमात्मा की ओर हो जाये ।

●**तो आइये, हम सभी मिलकर परमपिता परमात्मा के चैतन्य आशाओं के दीपक बनें, अपने कर्त्तव्यों को परमात्मा की दी गई शिक्षाओं से पूरा करें । शीघ्र ही अपनी मंज़िल पर पहुंचकर इस सम्पूर्णता की लम्बी यात्रा को सफल करें । अनमोल समय को पहचानें, अंतिम इशारों को पहचानें, अंतिम आवाज़ को सुनें, परमात्मा की आशाओं को पूरा कर पूर्ण करें । तीव्र गति-से लक्ष्य को प्राप्त करें, जन्मसिद्ध अधिकार को स्वीकार करें कि फिर एक बार महान कर्त्तव्य, दिव्य कर्त्तव्य करनेवालों की जय-जयकार हो उठे... ।** □

क्या रावण मर चुका है !

□ब्रह्माकुमार अवतार., आबू

यों तो यदि आध्यात्म सिद्धांत पक्ष द्वारा मान्य सिद्धांतों को महता देते हुए हम रामायण के पृष्ठों से खेलें तो ऐसा प्रतीत होता है कि रामायण का मूलमंत्र यह है कि दुख, दरिद्रता का विनाश कर, सुख-शांति, चैन-अमन का विस्तार... । पर-पीड़ा हरना, परोपकार करना । दिव्य गुणों को बढ़ावा देना दुर्गुण अथवा आसुरी अवगुणों को विनष्ट करना ।

व्यर्थ का अहंकार यानि देह अभिमान में आकर मानवीय नैतिक मूल्यों की अवहेलना करना तथा सामाजिक विषमताओं को विकसित कर समाज का अनिष्ट करने वाली अज्ञान अंधकार की निविड़ काली रेखा को काटकर उस पापमय घोर तिमिर को ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा प्रदीप्त करते हुए उस निष्प्राण,मृत मूर्च्छित समाज में पुनः नवचेतना भरना ।

बस, इसी भागीरथ कार्य की यादगार प्रथा आज प्रचलित है जिसे दशहरा कहते हैं । अश्वनी मास की शुक्ल पक्ष की दशमी अधर्म पर धर्म की विजय अर्थात् रावण पर राम की विजय का प्रतीक सदियों से दशहरा के रूप में मनाया जाता है ।

दक्षिण में मैसूर एवं उत्तर में कुल्लू के दशहरा की तो शान ही निराली है । खैर यह दूसरा पहलू है । हां, तो भारत की धर्मप्राण जनता की धार्मिक पर्वों, उत्सवों तथा त्यौहारों में अपरिहार्य आस्था है । अतः भारतीय जनजीवन की लोकमान्यता है कि दशहरा के दिन पुनः रावण, मेघनाथ और कुंभकर्ण आदि अधम अत्याचारियों के पुतले जलाने से समाज में फैले अत्याचार, पापाचार, व्यभिचार, अनैतिकता और विषमता जैसे अनिष्टकारी संतापप्रद समस्याओं की आग में मानव को झोंकने वाले दुर्जेय दुर्गुणों को भी भस्मी भूत करके सत्य, अहिंसा और धर्म के बीज बोये जायें ।

यह दशहरा उत्सव यद्यपि कुछ वर्षों पूर्व तो बड़े चाव एवं धार्मिक मान्यताओं के साथ मनाया जाता था, किंतु इस पर्व पर वज्रपात तब हुआ जब लंका सरकार ने यह चुनौती घोषित की कि लंका में रावण नाम का कोई राजा ही नहीं हुआ, और इस घोषणा को पृष्ठ भूमिका बनाकर रामायण के विषय में नानाविधि लोगों के मन में संशय उत्पन्न होने लगे हैं ।

संशय पैदा होने की बात भी है ही जिस तरह द्रयोधन के निकाल देने पर महाभारत महत्वहीन हो जायेगा उसी प्रकार रावण जैसे महत्वपूर्ण पात्र या रणस्थल लंका को ही रामायण से नदारद किया जाये तो रामकथा अर्थ शून्य एवं निर्मूल ही हो जायेगी ।

केवल इस एक बात की चुनौतीपूर्ण घोषणा ही रामायण पर अनेकों प्रश्नचिन्ह लगा देती है ? चिंतनशील मानव प्राणी के लिये यह एक सोचनीय विषय बन जाता है । हां, इससे यह तथ्य अवश्य ही सामने आता है कि लगता है रामायण का लेखक वास्तविकता की दीवारों को उलांघकर कहीं कल्पना के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका होगा ।

हां, इससे यह स्पष्टतः विदित हो जाता है कि रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर अवश्य ही किन्हीं बुराइयों का प्रतीक रहा होगा । जिस प्रतीक को उदाहरण बनाकर लेखक ने अपनी लेखनी आगे सरकाते हुए एक शिक्षाप्रद ग्रंथ की रचना कर डाली और उसमें विभिन्न पात्रों के नाम दिये जिस आधार पर ग्रंथ का नामकरण रामायण हुआ । खैर, कुछ भी हो महर्षि वालिमिकी जी एवं गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस अद्भुत और दुर्लभ ग्रंथ की रचना करके मानव में धर्म के प्रति आस्था जगाई एवं मानवीय नैतिक मूल्यों की रक्षा का जो भागीरथ कार्य किया वह सराहनीय है ।

हां, यह विषय अलग है कि लंका के इतिहास में रावण नामक राजा का कोई स्थान नहीं है । अतः इस हेतु यहां यह स्पष्टतः द्योतक माना जाता है कि रावण कोई व्यक्ति विशेष नहीं अपितु किन्हीं बुराइयों का प्रतीक था ।

यों भी यह विवेक मान्य बात भी नहीं कि किसी मानवीय देहधारी के दश सिर हों ? क्योंकि यह व्यावहारिक जीवन के दैनिक क्रियाकलापों के लिए अनेकों समस्याएं पैदा करने वाली बात है । यहां तक कि दश सिरों का असहनीय भार तथा खाना, सोना, करवट बदलना आदि आवश्यक कार्यों में भी बाधा पड़ने के कारण जीना ही दूभर हो जायेगा ।

हां, तो वास्तव में रावण शब्द मानवीय दुर्जेय शत्रु माया यानि विकारों का प्रतीक है । क्योंकि दश सिरों का तात्पर्य यह कि पांच विकार—काम, क्रोध लोभ, मोह और अहंकार नर एवं यही पांच विकार नारी में विद्यमान होने का प्रतीक हैं । जिन्हें सामुहिक नाम माया अथवा रावण दे दिया गया और भौतिक दस सिर एवं बीस भुजाएं ।

इसी प्रकार सीता का भी बात लीजिए । वास्तव में आत्मा-रूपी सीता जब स्वयं के मन के निर्धारित लक्ष्य रूपी लक्ष्मण रेखा का बुद्धि से अतिक्रमण कर जाती है तो तत्क्षण ही माया रूपी रावण उसे अपने चंगुल में दबोच कर बस आत्मा रूपी सीता को अपने हाथ की मानो कटपुतली ही बना देता है ।

जिस कारण उसे भीषण दुखों की असहनीय यातनाएं सहनी पड़ती हैं । तदंतर ही राम यानि स्वयं ईश्वर जो दयानिधे करूणा-सिंधु हैं आकर उसे स्वयं ईश्वरीय मर्यादाओं रूपी लक्ष्य को पुन: मन में कृतसंकल्प कराकर उसी मर्यादित लक्ष्मण रेखा में रहकर ईश्वरीय स्मृति के निरंतर अभ्यास द्वारा माया रूपी रावण के जाल से विमुक्त होने का पुरुषार्थ करने की श्रीमत देते हैं ।

तथा रामायण की शिक्षाओं को जीवन में धारण करने का पाठ पक्का कराते हैं । रामायण में रावण के दश सिरों को विकारों का प्रतीक माना गया है जो कि मानवीय अंतर निहित वृत्तियों को दूषित कर देते हैं । अत: उसके मानसिक स्तर को हेय एवं दृष्टि को भौतिक बना देते हैं ।

इस स्थिति में मनुष्य स्वयं से ही न केवल विस्मय हो जाता है अपितु ईश्वर से भी विमुख हो जाता है । बस, ईश्वरीय अनुपस्थिति ही असत्य एवं अधर्म की जड़ें गहराने में अति सहायक है । यही अधर्म अत्याचार और पापों की भी जननी है । अब बस इसी अधर्म के प्रतिरूप मायामय विकारों के जनक रावण को ही अब ईश्वरीय याद रूपी योग ज्वाला में जलाना है, न कि स्थूल आग में लकड़ी, कपड़े एवं कागज़ों के स्वांग को ।

इस ध्रुव सत्य को समझने से न केवल हमारा जीवन उच्च मर्यादाओं से अलंकृत ही हो पायेगा, अपितु रामायण के प्रति आस्था का विकास भी होगा । क्योंकि रामायण में हमें सदाचारी एवं चरित्रवान बनने के लिए जो शिक्षा मिलती है उसमें आदर, उदारता, नम्रता, शालीनता, सेवा (जिसमें सर्व प्रकार की लोक हितैषी सेवाएं संनिहित हैं) आज्ञा का पालन (अनुशासन का सम्मान) शक्ति की महिमा, मित्रता का भाव जाति-धर्म तथा ऊंच-नीच के भेदभाव रहित एवं संयम-नियम तथा मर्यादाओं से ओत-प्रोत जीवन, मानवता मिलती है ।

इसी प्रकार हर तरह की परिस्थितियों में मानसिक संतुलन बनाये रखना हर सम्भव संघर्ष एवं विपत्ति के माहौल का सामना करने का साहस, धैर्य एवं दिव्य गुणों को धारण करने की सत्प्रेरणा मिलती है ।

आइये, हम भी इस ऐतिहासिक उत्सव से कुछ प्रेरणाएं लेकर जीवन परिवर्तन हेतु संकल्पबद्ध हों । और वह यह कि इस माया रूपी रावण को अखंड योग की ज्वाला में भस्मकर अपनी अंतर निहित भावनाएं निष्छल हों । निर्मल हों । इस मन में सदा मानव-मात्र के प्रति स्नेह, सम्मान, सहानुभूति, सहयोग और भाईचारे की पुनीत भावनाओं के बीज अंकुरित हों । हम सदाचारी बनें । सर्व के हितकारी बनें । □

तुम चुपचाप दिए जलाए चलो...!

□ब्र.कु. 'प्रकाश' राजयोग भवन (भोपाल)

तुम चुपचाप दिए जलाए चलो,
मुड़कर मत देखो अंधियारों को ।
जीवन की नाव बढ़ाए चलो,
मत देखो छूटे किनारों को ।
जीवन पथ यह लम्बा है,
इन राहों में है आयाम बहुत ।
तुम किसी मोड़ पर रुक मत जाना,
अभी करना है तुम्हें काम बहुत ।
तुम उपवन नए खिलाए चलो...,
मुड़कर मत देखो अंधियारों को ।
तुम चुपचाप दिए जलाए चलो,
मुड़कर मत देखो अंधियारों को ।
हां बचकर रहना तुम अपनों से,
इस मिथ्या आकर्षण और सपनों से ।
यह साधन तो निर्वाह अर्थ है,
मृगतृष्णा की हर चाह व्यर्थ है ।
तुम आत्मस्मृति बनाए चलो,
तोड़ो दैहिक दीवारों को ।
तुम चुपचाप दिये जलाए चलो,
मुड़कर मत देखो अंधियारों को ।
है मानवता दुख से कराह रही,
धरा शांति फिर चाह रही ।
हर आंगन में मायूसी छायी सी,
अधरों पर हंसी मुरझायी सी ।
तुम शांति सुधा बरसाए चलो,
शीतल कर दो अंगारों को ।
तुम चुपचाप दिए जलाए चलो,
मुड़कर मत देखो अंधियारों को । □

लातूर : बी.के. नीरा, भ्राता विलासराव देशमुख, मंत्री राजस्व महाराष्ट्र राज्य को 'विश्व शान्ति अभियान' के लिए अपील का सन्देश दे रही है।

नेपाल : के सुप्रीमकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्राता धनेन्द्र बहादुर सिंह जी को आत्म-स्मृति का तिलक ब्र.कु. राज बहन लगा रही है।

जगन्नाथपुरी: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' के उपलक्ष्य में १६ सितम्बर को १६ साइकिल यात्री शान्ति अभियान पर रवाना होते हुए दिखाई दे रहे है।

दहिसर-बम्बई: ब्र.कु. योगिनी महाराष्ट्र सेल्सटैक्स ट्रिब्यूनल के मेंबर भ्राता टी.राम खाटपार जी को राखी बांधते हुए।

कटक: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' के उद्घाटन अवसर पर भ्राता प्रहलाद मलिक जी (सदस्य उड़ीसा योजना परिषद) प्रवचन करते हुए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

अगस्त मास में रक्षा-बंधन का पावन पर्व बड़े धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाया गया। सभी सेवाकेंद्रों-उप-सेवाकेंद्रों तथा सच्ची गीता पाठशालाओं से बड़े उत्साहवर्धक सेवा समाचार प्राप्त हुए हैं। पवित्रता का दिव्य ईश्वरीय संदेश देने हेतु सभी ब्रह्माकुमार तथा ब्रह्माकुमारी बहनों ने अपने क्षेत्र के सभी वर्गों के लोगों को राखी बांधकर 'पवित्र बनो, योगी बनो' का दिव्य संदेश दिया। सभी वर्गों में मुख्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों को जैसे गवर्नर, मंत्रीगण, संसद सदस्य, विधान सभाओं के सदस्य, मुख्य न्यायाधीशगण, पुलिस अधीक्षक कलक्टर संपादकों आदि महानुभावों को राखी बांधकर ईश्वरीय संदेश दिया गया। यहां तक कि दुखित आत्माओं को जेलों में जाकर कैदियों को, गरीब हरिजन बस्ती में रिक्शाचालकों को भी राखी बांधी गयी। अन्य सम्प्रदाय की आत्माओं को जैसे मुस्लिम, क्रिश्चियन व अन्य आत्माओं को भी पावन राखी बांधकर ईश्वरीय संदेश दिया गया। राखी बांधने का समाचार व चित्र-(फोटो) हमारे कार्यालय में इतने आये हैं कि अगर सभी को छापने का स्थान दिया जाए तो एक अच्छी-खासी पुस्तक तैयार हो सकती है। परंतु स्थान की कमी के कारण सेवा समाचार न देकर कुछ चित्रों को स्थान दिया गया है।

रक्षा-बंधन के तुरंत बाद ही जन्माष्टमी का शुभ महोत्सव आया, सभी देवी भाई-बहनों ने सेवाकेंद्रों पर सुंदर-सुंदर आकर्षण झांकियों व प्रदर्शिनियों द्वारा अनेक आत्माओं को श्रीकृष्ण समान गुणवान बनने का ईश्वरीय संदेश दिया। इस तरह जन्माष्टमी का त्योहार भी बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। जन्माष्टमी के बाद जो सेवाएं शुरू हुई हैं वह हैं अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के उपलक्ष्य में 'विश्वशांति अभियान' के लिए अपील—एक मिनट शांति में रहने के लिए—इस प्रोग्राम के जो भी समाचार हमारे कार्यालय में पहुंचे हैं उनका सेवा समाचार संक्षेप में दे रहे हैं—

बम्बई: 'मिलियन मिनट ऑफ पीस प्रोग्राम' के अंतर्गत बम्बई (कोलावा) सेवाकेंद्र की ओर से 'एक भव्य' समारोह वहां के प्रसिद्ध होटल 'ताज' के भव्य हाल में आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'सर्व धर्म सम्मेलन' व सद्भावना समारोह भी आयोजित किया गया जिसमें पारसी धार्मिक नेता डॉ. मिनोचर होमजी दसतूर, मुस्लिम धार्मिक नेता मौलाना महमूद हनीफ साहिब, ईसाई धर्म के पादरी डॉ. फ्लीक्स मैचोदा तथा सनातन धर्म के महामण्डलेश्वर स्वामीकाशीका नंदजी महाराज आदि ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र के लोकायुक्त जस्टिस वी.एस. देशपांडे, 'ब्लिट्ज समूह' के चीफ एडीटर एवं प्रोप्राइटर भ्राता आर.के. करनजिया, बम्बई विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार भ्राता जी.एम. राजऋषि तथा अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य भ्राता होमी जे.एच. तालेयर खां आदि भी सम्मिलित हुए थे। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका एवं विदेशों के सेवाकेंद्रों की संचालिका दादी जानकीजी भी मुख्यतौर से माऊंट आबू से पधारी थीं। सभी ने इस अनोखे कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि 'शांति का दान महादान' है और, जब तक हरेक व्यक्ति स्वयं शांति का अनुभव नहीं करेगा तो वह अन्यों को 'शांति का दान' कैसे देगा?

चण्डीगढ़: 'विश्वशांति अभियान' का शुभारम्भ चण्डीगढ़ में बहुत ही उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस सम्बंध में एक विशाल सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन 'राजयोग भवन' में किया गया। हरियाणा के लोक निर्माण मंत्री भ्राता फूलचंद मुलाना ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा अंग्रेजी ट्रिब्यून के सम्पादक भ्राता वी.एन. नारायण और हरियाणा पुलिस के डी.आई.जी. भ्राता वी.एन. नेगी माननीय अतिथि के रूप में पधारे।

विशेष अतिथियों ने अनेक गणमान्य व्यक्तियों के बीच मोमबत्ती जलाकर इस अद्भुत अभियान का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भ्राता फूलचंद मुलाना ने शांति की दिशा में व्यक्ति के योगदान का महत्व बताते सभी को इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आपने कहा भले ही परिस्थितियां दिनोंदिन बिगड़ती जा रही हैं और अशांति का वातावरण बढ़ता दिखाई देता है फिर भी हमें अपना प्रयास सतत करते रहना है। □

भोपाल: स्थानीय राजयोग भवन में १६ सितम्बर सायंकाल ८ बजे विश्वशांति अभियान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि म.प्र. के स्वास्थ्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री डॉ. कन्हैयालाल शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि "हमें सर्वे सुखिनः संतु संतु, सर्वे निरामयाः की उक्ति का अनुकरण करते हुए पर-पीड़क न बनकर सबको सुख व शांति देनी चाहिए—यही पुण्य है। उन्होंने कहा आज विश्वशांति की परम आवश्यकता है, इस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा चलाए जा रहे विश्वशांति अभियान में हमें व्यक्तिगत व सामूहिक मौन या शांति प्रार्थना द्वारा, पूरा सहयोग देना चाहिए। अंत में उन्होंने इस अभियान का हृदय से स्वागत व सराहना करते हुए स्वयं भी शांति अभ्यास में कुछ क्षण दान देने का संकल्प लिया तथा अभियान की पूर्ण सफलता हेतु शुभकामना व्यक्त की।" □

घाटकोपर (बम्बई): 'विश्वशांति अभियान' के उपलक्ष्य में हम दि. १८.९.८६ से दि. १५.१०.८६ तक २८ दिन के लिये प्रतिदिन शाम को दो घंटे की पदयात्रा निकाल रहे हैं । पदयात्रा का नाम 'शांति-संदेश पदयात्रा' होगा । इस पदयात्रा में पूरे ही २८ दिन चलनेवाले भाई-बहनों की संख्या करीबन ६०-७० है और बाकी १०० के करीब भाई-बहनें ऐसे हैं जो १५ दिन या १० दिन, ४ दिन, ८ दिन पदयात्रा में चलनेवाले हैं । प्रतिदिन यात्रा का प्रारम्भ किसी-न-किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा होगा । और समाप्ति स्थान पर फंक्शन होगा जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाया जायेगा ।

हुबली: अंतर्राष्ट्रीय 'शांति वर्ष' के अंतर्गत आयोजन किया हुआ ''विश्वशांति के लिए कोटि-कोटि शांति क्षणों की दान संग्रह'' कार्यक्रम को हुबली-धारवाड़ महानगर के मेयर मान्य श्री पी. हेच पवारजी ने ज्योति जगाकर उद्घाटन किया ।

इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में राजयोगी ब्रह्माकुमार बसवराजजी द्वारा शिव ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ । मुख्य अतिथि डॉ. वी.पी. जायदे और समारंभ के अध्यक्षा बी.के. बसवराजजी द्वारा शांतिदूत के रूप में शांति संदेशवाहक कबूतरों को आसमान में उड़ाया गया । □

चित्रकूटधाम् कर्वी: सेवाकेंद्र की ओर से १६.९.८६ को रेलवे स्टेशन (प्रतीक्षालय) में 'विश्वशांति अभियान' का आयोजन किया गया । जिसका उद्घाटन चित्रकूट (जानकीकुंड) के महाराज चंचल दासजी ने मोमबत्ती जलाकर किया । मंच पर उपस्थित मुस्लिम भाई मुहम्मदजी ने वर्तमान समय पर शांति की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये । ब्रह्माकुमारी बहनों ने लोगों का ध्यान संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित 'अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष १९८६' में इस विद्यालय द्वारा आयोजित 'विश्वशांति अभियान' की ओर आकृष्ट किया । जिसमें सितम्बर १६ से लेकर अक्टूबर १६ तक हर एक से अपने अमूल्य जीवन से कम-से-कम १ मिनट का समय निकालकर विश्वशांति के लिए (सकारात्मक विचारों, प्रार्थना अथवा राजयोग द्वारा) दान देने की अपील की । इस कार्यक्रम से लगभग ५०० आत्माओं ने लाभ उठाया । □

हैदराबाद: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस' अपील के उद्घाटन समारोह पर सायंकाल एक शांति यात्रा शहर के मध्य से निकालने के पश्चात् सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि भ्राता वसंत नागेश्वर राव (गृहमंत्री आंध्रप्रदेश) ने किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता बहिन के. अमरेश्वरी (न्यायाधीश-आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय) ने की । भ्राता प्रोफेसर टी. नवनीतराव (उपकुलपति-उस्मानिया विश्वविद्यालय) माननीय अतिथि के रूप में पधारे थे । अवसर पर बम्बई से पधारे रमेश भाई ने इस कार्यक्रम का महत्व बताते हुए विदेशों में चल रही सेवाओं से अवगत कराया । □

आगरा: १६ सितम्बर, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा शांति के लिए कोटि क्षण संग्रह अभियान का शुभारम्भ यहां राजयोग संग्रहालय के आगरा में समारोह पूर्वक शुरू हुआ । यह अभियान १६ सितम्बर से १६ अक्टूबर, ८६ तक चलेगा । इसमें संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा वर्ष १९८६ को शांति वर्ष घोषित किया है, तद्नुसार भारत एवं विश्वभर में प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, संगठन, शासन एवं सभा में प्रतिदिन कुछ मिनट शांति के लिये दान देने की अपील की जायेगी । आगरा जोन में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के भाई-बहिनों ने शांति सेवादल बनाया है, यह शांति दल ग्राम-ग्राम, गली-गली, शहर-शहर में जाकर स्कूलों, कॉलेजों, कारखानों, खेतों-खलियानों, कार्यालयों में व्यक्तियों से अपील करेगा कि वे रोजाना कम-से-कम ३ मिनट शांत रहने की प्रतिज्ञा लें । एक विशिष्ट फॉर्म भराकर उनकी प्रतिज्ञाओं को संयुक्त राष्ट्रसंघ में भेजा जायेगा । □

गोहाटी: समाचार यह है कि विश्वशांति वर्ष के उपलक्ष्य में भिन्न-भिन्न प्रोग्राम आप सभी कर रहे होंगे । यहां पर उद्घाटन समारोह बहुत ही सफल रहा । यहां पर १६ तारीख को यह समारोह रखा गया था उसके पूर्व यहां के मिनिस्टरों से फॉर्म भराया गया एवं १२ बजे के समय एक मिनट का योग करने को कहा गया था । साथ ही यंहा की दो बड़ी चर्च हैं उसमें भी १२ बजे का प्रोग्राम बताया गया । उन्होंने बड़े प्रेम से स्वीकार किया । साथ ही एक महीने के ४ ही इतवार की प्रार्थना में ३ मिनट के लिए स्पेशल विश्वशांति के लिए प्रार्थना करने के लिए इक्षा दिखाई और वहां के फादर ने भी फॉर्म भरा एवं अपने अनुयायियों से भी फॉर्म भरवाकर भेजने को कहा है ।

इसके अतिरिक्त यहा के रेलवे स्टेशन पर माइक द्वारा १२ बजे एक मिनट शांति का दान की अभियान सुनायी गयी । हिंदी, इंग्लिश, आसामी भाषा में । जब माइक में कहा गया तब जो जहां थे सभी साइलेन्स में हो गये । कोई रीजर्वेशन कराने आये थे कोई रीसीव करने सभी ने किया और सभी ने कहा, ''यह बहुत ही अच्छा प्रोग्राम है ।'' □

कल्याण: ''मिलियन मिनिट्स प्रोग्राम' में बहुत सफलता मिल रहा है । २० तारीख को मिलियन मिनट का प्रोग्राम रखा गया । इसी दिन शांताराम धोलप संसद सदस्य एम.पी. थाना आये थे उनका घर भी सेंटर से नजदीक है । जैसे पाण्डव भवन से ओमशांति भवन । ईश्वरीय विश्वविद्यालय जो कार्य कर रहा है उसकी बहुत महीमा की, साथ-साथ उन्होंने प्रतिदिन ५ मिनट ''शांतिदान' की प्रतिज्ञा की । इंग्लिश स्कूल के फादर, होलीक्रोस स्कूल की प्रिंसीपल आई थीं । श्रीमती लेहेशिया ने कहा की बाईबल में भी ऐसी बाते हैं साथ-साथ उन्होंने ईश्वरीय विश्वविद्यालय की महीमा करते हुए उन्होंने अपने स्कूल में कार्यक्रम रखने का निमंत्रण दिया । भगवानराव जोशी जो माजी नगराध्यक्ष हैं उन्होंने अपने मत मराठी में व्यक्त किये ।

फीरोजाबाद: १६ सितम्बर को विशेष स्थान फीरोजाबाद क्लब के हॉल में एक प्रोग्राम आयोजित किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्नरी मजिस्ट्रेट श्री कैलाशचंद्र चतुर्वेदी जी ने किया । तथा मुख्य वक्ता उमेश जोशी, मंच संचालन श्री नरेंद्र प्रकाश जैन (प्रिंसीपल) ने बड़े ही सुंदर ढंग से किया । इस प्रकार १६ सितम्बर से १६ अक्टूबर तक की विशेष सेवा शुरू की गयी । २२ स्कूलों तथा कुछ धार्मिक स्थान पर एक मिनट विश्वशांति दान के कार्यक्रम किये गये ।

डोंबिवली तथा अंबरनाथ: सेवाकेंद्र की ओर से अलग प्रकार की सेवा करेंगे । डोंबिवली में स्कूल, कॉलेज, मंदिर तथा जिनके घरों में गणपति रखते हैं उन्हों के घरों में आध्यात्मिक प्रवचनों द्वारा लोगों को शांति-संदेश देकर, शांति अभियान का उद्देश्य तथा कार्यविधि से अवगत कराके उनसे शांति क्षण दान लिये जायेंगे । अंबरनाथ में डोर-टू-डोर अर्थात् घर-घर में जाकर इसी प्रकार शांति दान के लिए अपील करेंगे ।

कटक: संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष १९८६ में आयोजित 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' का उद्घाटन समारोह १६ तारीख को चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय कॉलेज स्क्वायर के प्रांगण में धूमधाम से सम्पन्न हुआ । जिसमें लगभग १००० व्यक्तियों ने सन्मुख लाभ लिया तथा ४००० व्यक्तियों ने एक मास के लिए दस लाख १८ मिनट शांति के लिए जिसमें मंत्री, सैक्रेटरी, प्रिंसीपल, डॉक्टर्स और सर्जन, वैज्ञानिक डॉयरेक्टर (आई.ए.एस.) आफिसर्स रोटरी गर्वनर एवं सदस्य आदि ने भी शांति दान के फॉर्म भरे ।

बावला: यू.एन.ओ. द्वारा घोषित शांति वर्ष के उपलक्ष्य में बावला सेवाकेंद्र द्वारा विश्वशांति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वधर्म के संत महात्माओं स्वामी कमलानंदजी, स्वामी परमानंदजी, मौलाना हबीबूर्रहमान जस्टिस ए.एस. कुरेशी गुजरात हाईकोर्ट अहमदाबाद ने भाग लिया तथा सभी ने विश्वशांति के बारे में अपने-अपने विचार जनता के समक्ष रखे जिसमें बावला नगर की २००० हजार से भी अधिक जनता ने लाभ लिया ।

विदिशा: सेवाकेंद्र से समाचार मिला है कि नगर के टाउन हॉल में दि मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' का उद्घाटन श्री प्रतापभानु शर्मा संसद सदस्य द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम में नगर के अनेक गणमान्य नागरिक पधारे । मुख्य अतिथि शर्माजी ने संस्था द्वारा शांति के प्रयासों की सराहना करते हुए विश्वशांति प्रतिज्ञा पत्र भी भरकर दिया । □

कुरूक्षेत्र: ब्रह्माकुमारी सुनीता गोल्डन जुबली तथा 'मिलियन मिनिट्स आफ पीस अपील' समारोह में वक्तागण को बैज प्रदान करते हुए।

अंजनगांव (महाराष्ट्र) : में बी.के. रूकमणि जेल में कैदी को राखी बांधते हुए।

जगदीश चंद्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रैस, कृष्णनगर दिल्ली-59 से छपवाया।
Regd. No. 10563/65–D, (E)—70

लेकर दंगे-फसाद या हिंसा का कार्य नहीं किया । बाद में जब अन्य विधर्मी आक्रमणकारी यहां भारत में हिंसा के बल से शासक बने तभी वैर-वैमनस्य, बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन, तोड़-फोड़, अग्निकांड, अत्याचार इत्यादि का दौर शुरू हुआ ।

आज विश्व की स्थिति यह है कि धर्म के नाम पर इन जुल्मों को देखकर अथवा धर्म के नाम पर व्यापार करनेवालों को देखकर रूस, चीन, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया, बल्गारिया, ज़ैकोस्लवाकिया इत्यादि कितने देश तो साम्यवादी (Communist) बन गए हैं जो धर्म को अफ़ीम या आड़ मानते हैं । अन्य कुछ देश ऐसे हैं जहां सरकारी तौर से कोई धर्म निश्चित नहीं है परंतु वहां प्राय: ईसाई धर्म की मान्यता है । वहां थोड़-बहुत साम्यवादी भी हैं और कुछ अन्य धर्मों के भी । इस्राइल एक ऐसा देश है जहां युहूदी धर्म को सरकारी मान्यता है । लेकिन वो भी आज हिंसा-प्रधान देश है । कई देशों में मुस्लिम धर्म प्रचलित है । वहां मुस्लिम धर्म सरकारी तौर पर मान्य है । ईरान, पाकिस्तान, साउदी अरेबिया, इराक आदि ऐसे देश हैं । इनमें से कुछेक देशों की आपस में लड़ाई है । दूसरे देश भी अन्य किसी भी धर्म के प्रचार के लिए वहां इजाज़त नहीं देते । आज हिंदू धर्म, जो कि आदि सनातन धर्म अथवा आर्य धर्म का एक चतुर्थ अवस्था का रूप है, केवल भारतवर्ष में ही बहु-मान्य है । हां, नेपाल नरेश भी इसी के समर्थक तथा पालन करनेवाले हैं । परंतु जहां आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जो कि विश्व का सर्वप्रथम और सर्व-प्रमुख धर्म है, की स्थापना हुई थी, उस भारत देश की सरकार स्वयं को धर्मनिरपेक्ष कहती है । करोड़ों की संख्या में इसी धर्म ही के लोग यहां हैं परंतु यहां की सरकार अन्य कुछ आतंकवादियों या धर्म का नारा लगाकर हिंसा करनेवाले लोगों के कारण यहां धर्मनिरपेक्षता (Secularism) का यह अर्थ लेने लगी है कि जिस धर्म वालों का वास्तव में यह भू-खंड है, उन्हें ही पाबंदियों में जकड़ती जाती है । न केवल यहां सरकारी तौर पर उस धर्म की मान्यता नहीं है, बल्कि सरकार अपने अधिकारियों को भी मना करने लगी है कि वे सरकारी कार्यक्रमों में किसी भी धार्मिक रीति को न अपनाया करें ।

इस प्रकार अब स्थिति यह है कि राजसत्ता और धर्मसत्ता अलग होने के बाद अब हालत यह है कि दोनों में इतनी दूरी हो गयी है कि सरकार इस प्रकार के निर्णय करती है जिनका अर्थ यह है कि सरकार का धर्म से दूर का भी वास्ता न रहे । धर्म-ग्लानि तो थी ही परंतु यह धर्म की अतिग्लानि के चिन्ह हैं । धर्म को तो लोग पहले ही नहीं पहचानते थे न उसके अनुसार आचरण करते थे परंतु अब तो सरकार और धर्म का यहां तक भी सम्बंध हटता जायेगा कि कोई धार्मिक रस्म न रह जाय । यह धर्म की अतिग्लानि का परिचायक है क्योंकि उसी धर्म के देश में उसका यह हाल है । लोग अपने धर्म को आजकल ही भूल चुके हैं । यह स्थिति ऐतिहासिक महत्व की है क्योंकि यह इसकी पुनर्स्थापना के समय की प्रतीक है । □

इन्दौर : 'ओमशान्ति भवन' में भारतीय प्रेस कौंसिल के अध्यक्ष, न्यायमूर्ति ए.एन. सेन अपनी धर्मपत्नी के साथ वृक्षारोपण करते हुए।